CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

7·1

संगीत लता

प्रथम भाग

य-ग्रन्थालय
करौंदी, वाराणसी-५
31:3/57

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

संगीत लता

प्रथम भाग

शब्द एवं स्वरकार
स. आ. महाडकर

सम्पादक
शंकर रामचन्द्र गोलवलकर

प्रकाशक
रामचन्द्र संगीतालय
संगीत पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता
ग्वालियर-१ (म. प्र.)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संशोधित एवं परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण
१९६६

नया मूल्य रु. पाच/-

[redacted]

आम्नाय–ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

© रामचन्द्र संगीतालय
ग्वालियर–१

प्रकाशक :
शंकर रामचन्द्र गोलवलकर
रामचन्द्र संगीतालय
पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता
ग्वालियर–१ (म. प्र.)

मुद्रक :
द. वा. आंबेकर
आर्यभूषण मुद्रणालय,
९१५।१ शिवाजीनगर, पूना ४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

...ग्रन्थालय,
...निधि, करौंदी
वाराणसी-5

दो शब्द

आजकल संगीत का प्रचार बढ़ रहा है और पुस्तकें भी अधिक संख्या में प्रकाशित हो रही हैं यह हर्ष की बात है। किन्तु उनमें विशेषकर पाठ्यक्रम से संबंधित शास्त्र की ही पुस्तकें होती हैं। प्रचलित तथा अप्रचलित रागों की विभिन्न रसों में नई बंदिशों की पुस्तकें बहुत कम प्रकाशित हो रही हैं। इसका कारण यह है कि ऐसी पुस्तकें प्रकाशित करने में व्यापारिक दृष्टिसे अल्प लाभ होता है। परन्तु ऐसी पुस्तकों के अभाव में गायकों को नई-नई बन्दिशों की कमी खटकती है। प्रकाशित पुस्तकों में दिये हुए अधिकांश गीतों की धुनें एक ही धरतीकी होने से और लोकप्रिय रागों की पुरानी बन्दिशों की कुछ खास-खास चीजें निश्चित धुनों में गाई जाने से उन्हें सुनते-सुनते श्रोताओं की अभिरुचि अब मंद पड गई है। आजकल के गायक तथा श्रोता नये-नये राग तथा नई-नई धुनों के अभिलाषी होते जा रहे हैं। नये गीतों के एवं नई धुनों के अभाव में गायकों को वही पुरानी चीजें गाना आवश्यक हो जाता है। अतः गायक एवं श्रोताओं की अभिलाषा तथा कमी की पूर्ति करने के हेतु "संगीत लता" इस पुस्तक का संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण प्रकाशित करने का विचार किया।

पुस्तक के प्रथम संस्करण में केवल १४ बन्दिशें दी गईं थीं और वह कई वर्षोंसे अप्राप्य था। लोगों की विशेष मांग पर हम इस पुस्तक को नये रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। इस संस्करण में प्रचलित तथा अप्रचलित रागों में तथा विभिन्न धुनों में ६० बन्दिशें दी हैं जो पाठकों को उपयुक्त होंगी।

इसके पूर्व श्री. स० आ० महाडकर की बन्दिशों को पाठकोंने जिस प्रकार पसंद किया उसी प्रकार इस पुस्तक में दी हुई बन्दिशों को भी पसंद करेंगे ऐसी हमे आशा है।

आर्यभूषण मुद्रणालय, पूना ने हमारे अन्य प्रकाशनों की भाँति इस पुस्तक को भी थोडे समय में एवं सुन्दर रूप में छापकर दिया इसके लिये मुद्रणालय के व्यवस्थापक तथा कर्मचारीगण धन्यवाद के पात्र हैं।

प्रकाशक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चिन्ह–परिचय

रे, ग, ध, नि इन स्वरों के नीचे – ऐसी आड़ी रेखा लगी हो, तो इन स्वरों को कोमल स्वर मानना चाहिए, अन्यथा शुद्ध स्वर समझना चाहिए।

म — इस प्रकार का मध्यम शुद्ध अथवा कोमल समझना चाहिए।

मं — म स्वर के ऊपर खड़ी रेखा होने पर उसे तीव्र समझना चाहिए।

• — यह बिन्दु जिन स्वरों के नीचे हो, वे स्वर मन्द्र सप्तक के हैं और जिन स्वरों के ऊपर यह बिन्दु हो, वे स्वर तारसप्तक के हैं। बिना बिन्दु के सब स्वर मध्य सप्तक के समझने चाहिए।

‿ — इस चिन्ह के भीतर लिखे हुए स्वर अथवा अक्षर एक मात्रा-काल में कहना चाहिए। जैसेः– साऽरे, रेगमप, सुर, मुनि

— — यह चिन्ह जिस स्वर के आगे हो उस स्वर को एक मात्रा बढ़ाकर गाना चाहिए। जैसे ग–रे।

ऽ — गीत के शब्दोंमें यह अवग्रह–चिन्ह अक्षर के आगे आए तो उस अक्षर का उच्चारण एक मात्रा-काल बढ़ाना चाहिए। जैसेः– श्याऽम

⁀ — यह चिन्ह किस स्वर से किस स्वरतक मींड लेना है यह बतलाता है

जैसे :- साम, निध

( ) — जो स्वर इस प्रकार के कोष्ठक में लिखा हो, उसका अगला स्वर, वह स्वर उसका पहला स्वर और फिर वही स्वर, इस प्रकार चार स्वर एक मात्रा में गाए जाएँगे। जैसे :–(प) = ध प म प, (ध) = नि ध प ध।

ग
म — कहीं–कहीं स्वरों के ऊपर बाईं ओर छोटे टाइप में जो स्वर दिये हैं उन्हें कण–स्वर या अलंकारिक स्वर कहते हैं।

× — यह चिन्ह ताल की 'सम' दिखाता है। सम को पहली ताली मानकर आगे के (२) (३) अंको को दूसरी, तीसरी ताली समझना चाहिए।

० — यह चिन्ह ताल का खाली स्थान बतलाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत–सूची 'संगीत लता' भाग १

गीत	राग	पृष्ठ
१ जाने दो बनवारी	यमन	१
२ सुनोरी आज सखि	,,	२
३ भजन करो मन	भूपाली	३
४ घट भरिवे चलि	शुद्धकल्याण	४
५ गावो रे मन	श्यामकल्याण	५
६ कोयलिया कूक	मारुबिहाग	६
७ कैसे जाउं री	,,	७
८ डगरीया कैसे	नन्द	८
९ माधो मधुसूदना	अल्हैयाबिलावल	९
१० पूजन में आदि	बिहाग	१०
११ आज मोरी सुध	शंकरा	११
१२ जारे शरण तूं	देशकार	१२
१३ कोयल दुःख दे	मलुहाकेदार	१३
१४ लागी अखियां	बिहागड़ा	१४
१५ कर सिंगार	दुर्गा	१५
१६ जमुना के तीर	,,	१६
१७ आज कैसी खिल	,,	१७
१८ छाई है कैसी	मांड	१८
१९ चन्द्रमा भाल	हंसध्वनी	१९
२० झनन झनन	खमाज	२०
२१ मोहन जल	,,	२१
२२ सावन घन	देस	२२
२३ मधुबन में होरी	तिलककामोद	२३
२४ रसिया कैसी	तिलंग	२४
२५ ए तुम मोरा	जयजयवंती	२५
२६ बदरवा देखे	रागेश्वरी	२६
२७ निसदिन विरहा	खंबावती	२७
२८ सखियां मिल	नारायणी	२८
२९ रे नभ चंदा	कलावती	३०
३० कहां से तुम	,,	३१
३१ भोर भई दिनकर	भैरव	३२
३२ मो मन भाई	विभास	३३
३३ मोरे अंगना	,,	३४
३४ अजहूं न आये	भटियार	३५
३५ डारी डारी डारी	काफी	३६
३६ इतनी सुनो	,,	३७
३७ बाजी रे	बिंद्रावनीसारंग	३८
३८ सब सखियाँ	,,	३९
३९ मोहन मत वारा	मधमादसारंग	४०
४० अँखियाँ मोरी	भीमपलासी	४१
४१ झनन झनन	हंसकिंकिणी	४२
४२ नींद नसानी	मेघमल्हार	४३
४३ पार न पायो	चन्द्रकौंस	४४
४४ चांदनी आई	,,	४५
४५ कोउ न जाने	सूहा	४६
४६ दरस बेग देऊ	मालगुंजी	४७
४७ पलखन नही	जोग	४८
४८ सुन सुन सखी	आसावरी	४९
४९ सावन आया	कौंसीकानड़ा	५०
५० हो नंदलाल	गोपीवसंत	५१
५१ ठुमक ठुमक	मालकौंस	५२
५२ कदम की छैया	,,	५४
५३ रुनक झुनक	भैरवी	५५
५४ लाल मोरी	,,	५६
५५ मंदलरा बाजि	मधुवंती	५७
५६ सखि आयेंगे	विजयनागरी	५८
५७ ए सखि री	शुद्धसोहोनी	६०
५८ कारे बदरवा	सुघराई	६१
५९ प्रेम रस रसना	सारंग	६२
६० नंद के लाल	रागसागर	६३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्धिपत्र

हैडिंग, कणस्वर और ताल-चिन्होंकी पंक्तियां छोडकर गीत तथा स्वरलिपियों की पंक्तियां गिनना चाहिए।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	२	दाऽरथ	दाऽरथ ०
६ ,, १३ ,,	९ १२ ७ १२	कूंक	कूक
९	१७	मरली	मुरली
१२ ३८ ३९	६ ७ ४	हूंक	हूक
१२	९	गिरिजा पति	गिरिजापति
१३	१३	स – म ग	सा – म ग
१४ १५	१० ६	सांवरीया	साँवरिया
,, ,,	७ १३	साँवरीया	साँवरिया
१६ ,,	७ १६	भोहे	भौंहे
१८	९	बादरियां	बादरिया
,,	१६	सा – – – ऽऽऽऽ	सा – – – याऽऽऽ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२० २१	१० ४	सैंया	सैयाँ
२६ २७	१४ ८	कूंकत	कूकत
२८	१५	बस	सब
३४	४	कमरीया	कमरिया
३६	५	ऐसो	ऐसी
४५	१	रें न सु	रें नि सांरें
,,	९	कलियां	कलीयां
,,	१२	म ग सा सा	म ग॒ सा सा
५०	१	नि सां खी ऽ नि	नि॒ सां खी ऽ नि॒
५२	९	सां ध॒ नि॒ ध॒ मं	सां ध॒ नि॒ ध॒ मं
५८	१	सां ग॒ मं प	सां ग॒ मं पं

पृष्ठ १५ पर दिये हुए दुर्गा राग के 'कर सिंगार' इस गीत के अन्तरे की पहली पंक्तिः—

अन्तरा

म	म	प	–	सां	ध	सां	सां	सां	रेंध्र	सां	सां
प	ग	नू	ऽ	पु	र	झु	न	नु	बाऽ	ऽ	जे
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"संगीत–लता" भाग १ ला

यमन–एकताल (मध्यलय)

जाने दो हो बनवारी, अब न छेरो मोहे 'सुघर' निडर
डरत न काहूं से, तुम झूठि बतियां सारी ॥ धृ० ॥
कह गये थे पिय आवन दरसन को मो घरसन दरस
बिना मैं तरपत बीत जात रैन सारी ॥ १ ॥

स्थायी

नि	ध	प	—	[मं]ग	मं	ध	प	[ग]रे	—	सा	—
जा	ने	दो	ऽ	हो	ऽ	ब	न	वा	ऽ	री	ऽ
×		०		२		०		३		४	
[ग]रे	ग	रे	सा	—	रे	सा	सा	[ग]रे	ग	रे	प
अ	ब	न	छे	ऽ	रो	मो	हे	सु	घ	र	नि
×		०		२		०		३		४	
प	प	[ध]मं	ध	नि	सां	नि	ध	निसां	निध	प	प
ड	र	ड	र	त	न	का	हूं	सेऽ	ऽऽ	तु	म
×		०		२		०		३		४	
[ध]मं	ध	मं	ध	नि	ध	निरें	नि	(प)	[ग]रे	—	सा
झू	ऽ	ऽ	ठी	ऽ	ऽ	बऽ	ति	यां	सा	ऽ	री
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	प	सां	सां	सां	—	सां	सां	निरें	गरें	सां	सां
क	ह	ग	ये	थे	ऽ	पि	य	आऽ	ऽऽ	घु	न
×		०		२		०		३		४	
[सां]नि	रें	गं	पं	[गं]रें	—	नि	—	[ध]मं	ध	प	प
द	र	स	न	को	ऽ	मो	ऽ	घ	र	सु	न
×		०		२		०		३		४	
[मं]ग	मं	ग	प	प	—	प	—	[नि]ध	नि	प	प
द	र	स	बि	ना	ऽ	मैं	ऽ	त	र	पु	त
×		०		२		०		३		४	
[ध]मं	ध	मं	[नि]धनि	सां	सां	निरें	सांनि	(प)	[ग]रे	—	सा
बी	ऽ	त	जाऽ	ऽ	त	रैंऽ	ऽऽ	न	सा	ऽ	री
×		०		२		०		३		४	

यमन—तीनताल (मध्यलय)

सुनो री आज सखि मनवा मोरा हुलसे, जबतें सुनि
पिया आये ॥ धृ० ॥ उन बिन बरस रही अँखियाँ
मोरी, बेग बेग ' सुघर ' मिलन जियरा तरसे ॥ १ ॥

स्थायी

ध़	नि़	ध़	सा	—	सा	सा	नि़	सा	ग	रे	ग	—	ग	मं	ग
सु	नो	रि	आ	ऽ	ज	स	खि	म	न	वा	मो	ऽ	रा	हु	ल
×				२				०				३			
प	—	—	—	ग	मं	प	ध	प	मं	ग	रे	सा	रे	सा	—
से	ऽ	ऽ	ऽ	ज	ब	तें	सु	नी	ऽ	पि	या	आ	ऽ	ये	ऽ
×				२				०				३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प ग प प	सां सां सां सां	नि रें गं रें	सां नि ध प
उ न बि न	ब र स र	ही ऽ अँ खि	याँ ऽ मो री
३	×	२	०
रें गं रें सां	नि ध मं प	मं रे ग रे	निं रे गमं (प)
बे ऽ ग बे	ऽ ग सु घ	र मि ल न	जि य राऽ ऽ
३	×	२	०
रें ग रे सा			
ऽ त र से			
३			

भूपाली—त्रिताल (मध्यलय)

भजन करो रे मन बावरे, भजन बिना यह बीति
उमरियाँ, राम नाम को गाय बावरे ॥ धृ० ॥
मिलते भजनन चार पदारथ, भक्ति भाव नहीं
जात अकारथ, 'सुघर' सुमिर मन अष्ट जाम रे ॥ १ ॥

स्थायी

सां	ध प ग रे	ग — — —	ग रे ग प	गरे सा — —
भ	ज न क रो	रे ऽ ऽ ऽ	म न बा ऽ	वऽ रे ऽ ऽ
	३	×	२	०
	सा सा ग रे	ग — प ध	प — ग प	ग रे सा —
	भ ज न बि	ना ऽ य ह	बी ऽ ति उ	म रि याँ ऽ
	३	×	२	०
	सां — ध सां	— ध प —	गप धसां धप ग	— रे सा —
	रा ऽ म ना	ऽ म को ऽ	गाऽ ऽऽ यऽ बा	ऽ व रे ऽ
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	प	ग	—	प	प	सां	ध	सां	—	सां	सां	सां	रें	सां	सां
मि	ल	ते	ऽ	भ	ज	न	न	चा	ऽ	र	प	दा	ऽ	र	थ
३				×				२							
सां	—	ध	सां	—	सां	रें	रें	सां	रें	गं	रें	सां	रें	सां	सां
भ	ऽ	क्ति,	भा	ऽ	व	न	हीं	जा	ऽ	त	अ	का	ऽ	र	थ
३				×				२				०			
प	ग	प	ध	सां	सां	ध	प	ग	प	गरे	ग	—	रे	सा	—
सु	घ	र	सु	मि	र	म	न	अ	ऽ	छूऽ	जा	ऽ	म	रे	ऽ
३				×				२				०			

शुद्धकल्याण—एकताल (मध्यलय)

घट भरिवे चालि जमुना, झूमत सब गावे तान
हरि दरसन भेख धरे, बृजकी सब बृज ललना ॥ धृ० ॥
मुख अनुपम हरि निहार, मगन भई 'सुघर' नार
सुध बुध सब बिसर गई, रहे घट सब जल जमुना ॥ १ ॥

स्थायी

ग	सा	रे	ध़	सा	—	ग	रे	प	प	ग	—
घ	ट	भ	रि	वे	ऽ	च	ली	ज	मु	ना	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ग	प	रे	रे	रे	रे	सा	रे	ग	सा	—	सा
झू	ऽ	म	त	स	ब	गा	ऽ	वे	ता	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
प़	प़	ग	ग	ग	ग	ग	रे	प	प	ग	—
ह	रि	द	र	स	न	भे	ऽ	ख	ध	रे	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ग	ध	प	मं	ग	रे	ग	प	रे	रे	सा	रे
बृ	ज	की	ऽ	स	ब	बृ	ज	ल	ल	ना	ऽ
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अन्तरा

प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	—	सां
सु	ख	अ	नु	प	म	ह	रि	नि	हा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
ध	ध	ध	ध	सां	रें	सां	नि	ध	नि	ध	प
म	ग	न	भ	ई	ऽ	सु	घ	र	ना	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
प	ग	प	प	प	प	ध	नि	ध	प	प	ग
सु	ध	बु	ध	स	ब	त्रि	स	र	ग	ई	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ग	ध	प	पमं	ग	रे	ग	प	रें	रे	सा	रे
र	हे	घ	टऽ	स	ब	ज	ल	ज	मु	ना	ऽ
×		०		२		०		३		४	

श्यामकल्याण—त्रिताल

गावो रे मन गावो रे, हरि गुनन के नित जस गावो,
श्यामकल्याण राग के सुरसों ॥ धृ० ॥ सब सुर गावत
होत मुदित मन, ध्यावत निस दिन फल पावत छिन
'सुघर' कहत दोऊ जोरत कर सों ॥ १ ॥

स्थायी

			सा		म		प									
गम	रे	सा	नि़	सा	रे	—	मं	—	प	—	मं	(प)	म	रे	—	गम
गाऽ	वो	रे	म	न	गा	ऽ	ऽ	ऽ	वो	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	हऽ
	३				×				२				०			
																प
	प	ग	म	रे	सा	—	—	—	सा	सा	सा	सा	रे	—	सा,	मं
	री	गु	न	न	के	ऽ	ऽ	ऽ	नि	त	ज	स	गा	ऽ	वो,	श्या
	३				×				२				०			
								प								
	प	धनि	सां	निध	नि	—	प	मं	—	मं	प	(प)	म	रे	सा	—
	ऽ	मऽ	ऽ	कऽ	ल्या	ऽ	ण	रा	ऽ	ग	के	ऽ	सु	र	सों	ऽ
	३				×				२				०			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	प	सां	सां	सां	–	रें	सां	निसां	रें	सां	नि	ध	पमं	ध	प
सु	ब	सु	र	गा	ऽ	ब	त	होऽ	ऽ	त	मु	दि	तऽ	म	न
३				×				२				०			
(प) मं	–	(प) मं	(प) मं	प	मं	प	प	मं	(प)	म	रे	सा	रे	सा	सा
ध्याऽ	ब	त		नि	स	दि	न	फू	ल	पा	ऽ	ब	त	छि	न
३				×				२				०			
नि़	सा	रे	मं	प	प	मं	प	धनि	सां	नि	ध	मं	(प)	मग	मंप
सु	घ	र	क	ह	त	दो	ऊ	जोऽ	ऽ	र	त	कू	र	सोंऽ,	गाऽ
३				×				२				०			
गम:	रेग:	नि़	सा	(म) रे	–	(प) मं	–	प	–	मं	(प)				
बोऽ	रेऽ	म	न	गा	ऽ	ऽ	ऽ	बौ	ऽ	ऽ	ऽ				
३				×				२							

मारुबिहाग–एकताल (विलम्बित)

कोयलिया कूंक सुनाय रही बन अपने पीया के कारन ॥ ध्रु० ॥
मीठे मीठे बैन सोहे मन में अत सुख पायो 'सुघर' उचारन ॥ १ ॥

स्थायी

मंग	रेसा	रेनि़	नि़सागसागमंपमं	प	–	(ग) मं	-ग
कोय	लिया	ऽऽ	कूंऽऽऽकऽऽसु	ना	ऽ	ऽ	ऽय
३		४		×		०	
मंग	रेसा	नि़सागगरेसानि़–	सासा	(सा) प़	नि़	सा	–
रही	ऽऽ	बऽऽऽऽऽऽऽ	ऽन	अ	प	ने	ऽ
२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा म	मग-म	प नि	धप	मंधपमंगमंप-	ग	मंग	सा रेसा
पी	याऽऽऽ	के	ऽऽ	काऽऽऽऽऽऽऽ	ऽ	रऽ	ऽन
×		०		२		०	

अन्तरा

गमं	पसां	सां	–	निरें	सां	पनिसांगं	मंगंरेंसां
मींठे	मीठे	बै	ऽ	ऽऽ	न	सोऽऽऽ	ऽहेऽऽ
४		×		०		२	
निरेंनिध	प–मंग	साम	मग	गप	ऽधनि	नि	धप
मऽनऽ	मेंऽऽऽ	अत	ऽऽ	ऽऽ	ऽसुख	पा	ऽयो
०		३		४		×	
गमपनिसांगं--	रेंसां	रेंसां	निधपमंग	मंग	सा रेसा		
सुघर ऽऽ ऽऽऽ	ऽऽ	उचा	ऽऽऽऽऽ	रन	ऽऽ		
०		२		०			

मारुविहाग—त्रिताल (मध्यलय)

कैसे जाउं री पनघट वा, रोके ठाढ़ो गलियनमें ॥ धृ० ॥
होत अबेर घर जावन, ‘ सुघर ’ करे बसमें ॥ १ ॥

स्थायी

ग	मं प – सां	नि – ध प	प पमं ग मं	(ग) रे सा नि़
कै	से जा ऽ उं	री ऽ ऽ ऽ	प नऽ घ ट	वा ऽ ऽ रो
	३	×	२	०
	(सा) नि़ – प़	नि़ सा म ग	नि ध प मं	ग रे सा, ग
	के ठा ऽ ढ़ो	ग लि य न	में ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ, कै
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

															ग
															हो
मं	प	सां	सां	सां	–	–	सां	सां	सां	सां	नि	रें	सां	–	नि
ऽ	त	ऽ	अ	बे	ऽ	ऽ	र	घ	र	जा	ऽ	व	न	ऽ	सु
३				×				२				०			
(सां)नि	ध	नि		प	ग	मं	ग	नि	ध	प	मं	ग	रे	सा,	ग
घ	र	ऽ	क	रे	ऽ	ब	स	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	कै
३				×				२				०			

नन्द–त्रिताल (मध्यलय)

डगरीया कैसे रोके बनवारी, रोको नाही सिर गागर
अति भारी, लागू तोरी पैयाँ 'सुघर' मुरारी, रोके
बनवारी ॥ धृ० ॥ अबकी लेहूं दध माखन, बसना करो
अपने आंखन, संग ना सहेली पाय अकेली,
अटपट डगर नही आऊं तोरी, रोके बनवारी ॥ १ ॥

स्थायी

ग	ग	मध	पप	रे	–	सा,	ग	म	प	–	ध	नि	–	प	–
ड	ग	रिऽ	याऽ	कै	ऽ	से,	रो	के	ब	ऽ	न	वा	ऽ	ऽ	ऽ
२				०				३				×			
पध	–	मंप	–	गम	–	ग,	सां	सां	सां	–	सांनि	धनि	नि	पध	–
ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	रीऽ	ऽ	ऽ,	रो	को	ना	ऽ	हीऽ	सिऽ	र	गाऽ	ऽ
२				०				३				×			
प	प	ग	म	प	सां	सां,	ग	म	प	–	ध	नि	–	प	ग
ग	र	अ	त	भा	ऽ	री,	ला	गूं	तो	ऽ	री	पै	ऽ	याँ	ऽ
२				०				३				×			
सा	ग	मध	पप	रें	सा	–,	ग	म	प	–	ध	नि	–	प	–
सु	घ	रऽ	मुऽ	रा	री	ऽ,	रो	के	ब	ऽ	न	वा	ऽ	री	ऽ
२				०				३				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग म प सां	सां – सां –	सां सां निसां रें	सां नि –, सां
अ ब की ऽ	ले ऽ हूं ऽ	द ध माऽ ऽ	ख न ऽ, ब
सां गं – पं	रें – सां सां	पसां निसां धनि पध	मंप मंप ग, सां
सु ना ऽ क	रो ऽ अ प	नेऽ ऽऽ आंऽ ऽऽ	खऽ ऽऽ न, सं
सां सां – निध	नि – प –	ग म प प	सां – सां, ग
ग ना ऽ सऽ	हे ऽ ली ऽ	पा ऽ य अ	के ऽ ली, अ
ग म – प	ध नि प, ग	ग गम ध प	रें सा –, ग
ट प ऽ ट	ड ग र, न	ही आऽ ऽ ऊं	तो री ऽ, रो
म प – ध	नि – प –		
के ब ऽ न	वा ऽ री ऽ		

अल्हैयाबिलावल—त्रिताल (मध्यलय)

माधो मधुसूदना, मुकुंद मुरली धरे करमें ॥ धृ० ॥
‘ सुघर ’ मुरत जिन नैनन देखी, सफल जनम
तिन होत छिन हीं, परम विमल छबि नारायणा ॥ १ ॥

स्थायी

धनि सां धनि प	म गम प म	ग – म रे	सा रे सा –
माऽ ऽ धोऽ म	धु सूऽ ऽ द	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
सा ग म रे	ग प नि ध	नि सां – सांरें	सांसां धप मग रेग
मु कुं ऽ द	म र ली ऽ	ध रे ऽ कऽ	रऽ मेंऽ ऽऽ ऽऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प प प प	(ध ध) नि नि नि नि	सां – सां सां	सां रें सां –
सु घ र मु	र त जि न	नै ऽ न न	दे ऽ खी ऽ
०	३	×	२
सां गं (र) गं मं	गं रें सां सां	सां(सां) – सांनि	ध नि॒ प –
स फ ल ज	न म ति न	हो ऽ ऽ तऽ	छि न हीं ऽ
०	३	×	२
प प प रें	सां सां धनि॒ प	पध ग म रे	गप गप धनि सां
प र म वि	म ल छऽ बि	नाऽ रा ऽ य	णाऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
०	३	×	२

बिहाग—त्रिताल (मध्यलय)

पूजन में आदि स्वरूप अनादि, बलमें अगाधि
इष्ट 'सुघर' को ॥ धृ० ॥ भक्त न देत अतुल
वरदान, कर कल्याण देत महाज्ञान, गाये
श्रुति पुराण बिघन हरण को ॥ १ ॥

स्थायी

(प) – ग म	गरे सा (सा) सा	नि़ प़ नि़ सा	म ग – सा
पू ऽ ज न	मेंऽ आ ऽ दि	स्व रू प ऽ	अ ना ऽ दि
०	३	×	२
ग म प नि	सां नि – प	ध – मं पमं	ग म ग सा
ब ल में ऽ	अ गा ऽ धि	इ ऽ ष्ट सुऽ	घ र को ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

ग म प नि	सां – सां सां	नि सां नि प	सां (सां) नि नि
भ ऽ क्त न	दे ऽ त अ	तु ल व र	दा ऽ ऽ न
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां गं सां नि	प – प पमं	ध मं ग म	ग – सा नि़
क र क ऽ	ल्या ऽ ण देऽ	ऽ त म हा	ज्ञा ऽ न, गा
०	३	×	२
प़ नि़ सा म	ग – म प	नि सां नि प	मं ग म ग
ये श्रु ति पु	रा ऽ ण बि	घ न ह र	ण ऽ ऽ को
०	३	×	२

शंकरा–त्रिताल (मध्यलय)

आज मोरी सुध बिसर गई, का मैं जानूं को बजाई
श्रवनन सों भनक परी, रैन सारी बीत गई ॥ धृ० ॥
आज मैं बावरी भई सुन मुरलिया, लगी तान तन सों,
बिकलत हिया हूंक उठत मैं परबस भई ॥ १ ॥

स्थायी

	ध ध प	ध	
सां सां सां सांनि	नि प – ग	प नि – सां	नि – – –
आ ज मो रीऽ	सु ध ऽ बि	स र ऽ ग	ई ऽ ऽ ऽ
२	०	३	×
			प प
नि – प प	– ग गप धप	ग सा – सा	सा सा ग ग
का ऽ मैं जा	ऽ नुं कोऽ ऽऽ	ब जा ऽ ई	श्र व न न
२	०	३	×
प		सां	
प – ग प	नि सां नि –	गं – रें सां	नि प प ग
सों ऽ भ न	क प री ऽ	रै ऽ न सा	ऽ री बी ऽ
२	०	३	×
	ध ध प	ध	
प ग सा –	नि प – ग	प नि – सां	नि – – –
त ग ई ऽ	सु ध ऽ बि	स र ऽ ग	ई ऽ ऽ ऽ
२	०	३	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सां	सां	सां	प
आ	ज	मैं	बा
२			

प	सां	–	सां	सां	–	–	–	सां	सां	सां	सांनि	रें	सां	–	, सां
व	री	ऽ	भ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	सु	न	मु	रऽ	लि	या	ऽ	, ल
०				३				×				२			
सां	सां	–	[रें] सां	नि	नि	[ध] प	–	[प] ग	प	नि	ध	सां	नि	–	, प
गी	ता	ऽ	न	त	न	सों	ऽ	बि	क	ल	त	हि	या	ऽ	, हूं
०				३				×				२			
ग	प	–	प	सां	नि	प	–	प	ग	[प] ग	प	ग	सा,	ग	प
ऽ	क	ऽ	उ	ठ	त	मैं	ऽ	प	र	ब	स	भ	ई,	मो	री
०				३				×				२			

देशकार—एकताल (विलम्बित)

जारे शरण तूं जा गिरिजा पतिसकल जगत के
अधिपति ॥धृ० ॥ सब कोई ध्यावत ब्रह्मादिक
सुर 'सुघर' देव कैलासपति ॥ १ ॥

स्थायी

गपधपगसा	गपधसां	प	[प] ध	धप	[प] ग	पग	गपधप
जाऽऽऽरेऽ	शरणतूं	जा	ऽ	गिरि	जा	ऽऽ	ऽऽऽप
४		×		०		२	

ग	सा	सा	रे	[सा] ध़	सा	गग	[ग] प	धसांधप	गप	गपधसां	–
ती	ऽ	स	क	ल	ऽ	जग	त	केऽऽऽ	ऽऽ	अधिपति	ऽ
०		३		४		×		०		२	

पध	[ध] गप	गपधसांरेंगंगंरें	सांसांधपगरेसा–
ऽऽ	ऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽ
०		३	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

गप	सांध	सां	–	रें	सां	सांरें	गंरें	सांसां	पधध
सब	कोई	ध्या	ऽ	व	त	ब्रऽ	ह्माऽ	दिक	ऽसुर
४		×		०		२		०	
गं	रें	सां (ध)	पध	गपधसां	ध	गपधसांधप	धग		
सु	घ	र	ऽऽ	देऽऽऽ	व	कैऽऽऽऽऽ	ऽऽ		
३		४		×		०			
पग		गप,गपधप		ग	सा	गपधसांरेंगंगंरें	सांसांधपगरेसा–		
त्नाऽ		सऽ,ऽऽऽप		तीं	ऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	ऽऽ ऽऽऽऽऽऽ		
२				०		३			

मलुहाकेदार—त्रिताल (मध्यलय)

कोयल दुःख दे कूंक कूंक अत, बीते बसंत
कंथ बिन सजनी, पापि पपीहरा डारे फूंक ॥ धृ० ॥
जब सुधि आवे 'सुघर' पियाकी, जात रहत बुधि
मोरे जियाकी, बिरह अनल तन डारे फूंक अत ॥ १ ॥

स्थायी

	–	ध़	प़	ध़	म़	प़	–	नि़	–	नि़	सा	–	सा	रे	सा
को	ऽ	य	ल	दु	ख	दे	ऽ	कूं	ऽ	क	कूं	ऽ	क	अ	त
०				३				×				२			
स	–	म	ग	प	प	प	मंप	ध	प	गम	रे	सा	रे	सा	–
बी	ऽ	ते	ब	सं	ऽ	त	कंऽ	ऽ	थ	बिऽ	न	स	ज	नी	ऽ
०				३				×				२			
सा	–	म	म	प	प	सां	–	पध	प	–	म	–	रे	सा	सा
पा	ऽ	पि	प	पी	ह	रा	ऽ	डाऽ	रे	ऽ	फूं	ऽ	क	अ	त
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प प सां सां	सां – सां –	:प नि सां रें	सां – धप म
ज ब सु धि	आ ऽ वे ऽ	सु घ र पि	या ऽ कीऽ ऽ
°	३	×	२
पं – प प	मध पप म म	ग म प ग	म रे सा –
जा ऽ त र	हऽ तऽ बु धि	मो ऽ रे जि	या ऽ की ऽ
°	३	×	२
सा सा म ग	प प सां सां	पध प – म	रे रे सा सा
बि र ह अ	न ल त न	डाऽ रे ऽ फूं	ऽ क अ त
°	३	×	: २

बिहागडा—त्रिताल (मध्यलय)

लागीं अंखियां मोरे रसिया, जब ते सुनी तोरी
मोह भरी मुरली की धुन मन बावरीया ॥ धृ० ॥
तन में बसी 'सुघर' मन माही, लाख जतन कर
बिसरत नाही सुध बुध हरलई सांवरीया ॥ १ ॥

स्थायी

नि	ध प ग म	ग – – –	सा ग म ध	प ग म, ग
ला	ऽ गि अं खि	यां ऽ ऽ ऽ	मो रे र सि	या ऽ ऽ, ज
	३	×	२	°
	म ध – ध	पध नि ध प	ग म प सां	नि ध प ग
	ब ते ऽ सु	नीऽ ऽ तो री	मो ऽ ह भ	री ऽ ऽ मु
	३	×	२	°
	म प नि सां	गं रें सां सां	ग म प म	ग रे सा –
	र ली ऽ की	धु न म न	बा ऽ व री	या ऽ ऽ ऽ
	३	×	२	°

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म प नि नि	सां – – प	नि सां निसां रेंसां	नि – प –
त	न में ऽ ब	सी ऽ ऽ सु	घ र मऽ नऽ	मा ऽ ही ऽ
	३	×	२	०
	प नि सां मं	गं रें सां सां	निध प ग म	ग रे सा –
	ला ऽ ख ज	त न क र	विऽ स र त	ना ऽ ही ऽ
	३	×	२	०
	सा सा ग म	पध सांनि ध प	ग – गमप म	ग रे सा –
	सु ध बु ध	हऽ रऽ ल ई	सां ऽ वऽऽ री	या ऽ ऽ ऽ
	३	×	२	०

दुर्गा—एकताल (मध्यलय)

कर सिंगार बन सों निकसी, संग साथ साँवरीया ॥ धृ० ॥
पग नूपुर झनन बाजे, कर कंकण बसन साजे,
सोहे उर माला धारे ॥ १ ॥

स्थायी

		सां		म	
सां सां	सां ध	– म	रे रेम	रे सा	सा सा
क र	सिं गा	ऽ र	ब नऽ	सों नि	क सी
×	०	२	०	३	४
सारे मरे	ध सा	– सा	सांरें सांसां	धप मम	रेसा धसा
संऽ ऽऽ	ग सा	ऽ थ	साँऽ वऽ	रीऽ ऽऽ	याऽ ऽऽ
×	०	२	०	३	४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

^{सां}ध सां	^{मं}रें मं	रें सां	^{सां}ध सां	रेंसां ध	— म
क र	कं ऽ	क ण	ब स	नऽ सा	ऽ जे
×	०	२	०	३	४
म प	^{सां}ध सां	सां सां	पध सांसां	धप मप	मम रेसा
सो ऽ	हे ऽ	उ र	माऽ ऽऽ	लाऽ धाऽ	ऽऽ रीऽ
×	०	२	०	३	४

दुर्गा—त्रिताल (मध्यलयं)

जमुना के तीर ठाढी सुहावे कजरा रे नैन बोलत
मधु बैन, बस में करत चित चोरत लजावे ॥ धृ ० ॥
भोंहे कमान लिये, नैनवा के तीर चलावे, सुंदर
'सुघर' मुरत मन भावे ॥ १ ॥

स्थायी

^{सां}ध	ध म — रे	प — प ध	म पध सां पध	म — म, रे
ज	सु ना ऽ के	ती ऽ र ठा	ऽ ढीऽ ऽ सुऽ	हा ऽ वे, क
	३	×	२	०
	म सा रे ^{सा}ध़	सा — सा, ^मरे	म प ध म	रे — सा, म
	ज रा ऽ रे	नैं ऽ न, बो	ल त म धु	बैं ऽ न, ब
	३	×	२	०
	रें प — प	ध म प ध	सांध रें सां धप	ग रे सा —
	स में ऽ क	र त चि त	चोऽ र त लऽ	जा ऽ वे ऽ
	३	×	२	०

अन्तरा

म	प ^{सां}ध — ^{सां}ध	सां — — —	— — सां —	रें सां, — ^{सां}ध
भों	ऽ हे ऽ क	मा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ न ऽ	लि ये, ऽ नै
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां रें — रें	सां — — —	(सां) ध — म प	म — म, रे
न वा ऽ के	ती ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ र च	ला ऽ वे, सुं
३	×	२	०
म रे — सा	मरे प प प	धप मप धसां धप	मप मम रेसा —
ऽ द ऽ र	सुऽ घ र सु	रऽ तऽ मऽ नऽ	भाऽ ऽऽ वेऽ ऽ
३	×	२	०

दुर्गा—त्रिताल (मध्यलय)

आज कैसी खिल रही चांदनी, मोद बढ़ावत रस
बरसावत सब मन भावत शरद की चांदनी ॥ धृ ० ॥
मंद मंद मदमाति सुगंधित बहत समीर चहुं दिसि सोभित
विहसत नभमें चांद संग अति 'सुघर' सी चांदनी ॥१॥

स्थायी

ध म प (सां) ध	सां सां धप म	— रे सा रे	प — — —
आ ज कै सी	खि ल रऽ ही	ऽ चां ऽ द	नी ऽ ऽ ऽ
२	०	३	×
,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,	(म) रे म रे सा
,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,	मो ऽ द ब
२	०	३	×
रे ध़ सा सा	म रे प प	ध — प ध	सां रें सां सां
ढा ऽ व त	र स व र	सा ऽ व त	स ब म न
२	०	३	×
ध म प ध	सां सां धप म	— रे सा रे	प — — —
भा ऽ व त	श र दऽ की	ऽ चां ऽ द	नी ऽ ऽ ऽ
२	०	३	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म − म प	− प सां ध	सां − सां सां	(सां) रें ध सां सां
मं ऽ द् मं	ऽ द् म द्	मा ऽ ति सु	गं ऽ धि त
०	३	×	२
रें मं रें सां	रें रें सां सां	ध सां रें सां	ध − म म
ब ह त स	मी ऽ र च	हूं ऽ दि सि	सो ऽ भि त
०	३	×	२
म रे प प	ध ध म प	(सां) ध सां धप म	− रे, सा सा
वि ह स त	न भ में ऽ	चां ऽ दऽ सं	ऽ ग, अ ति
०	३	×	२
सां सां धप म	− रे सा रे	प − − −	ध म प (सां) ध
सु घ रऽ सी	ऽ चां ऽ द्	नी ऽ ऽ ऽ	आ ज कै सी
०	३	×	२

मांड—त्रिताल (मध्यलय)

छाई है कैसी छाई बादरियां नभ में, उमड उमड
घन गरजत बरसत जीया मोरा डर पावे ॥धृ० ॥
दामिनी दमके बिजरी चमके, पवन बहत बहु जोर जोरसे,
कांपे तन सब बिरह जलनसे, कैसे धीर धरू माई ॥ १ ॥

स्थायी

ग	म पध निसां नि	सां − − −	ध प ध नि	धप ध − ग
छा	ऽ ईऽ ऽऽ है	कै ऽ ऽ ऽ	सी ऽ छा ऽ	ईऽ ऽ ऽ बा
	३	×	२	०
	म रे − नि़	सा − − −	ग म प नि	ध − − ग
	ऽ द् ऽ रि	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ न भ	में ऽ ऽ बा
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म रें – नि़	सा – – –	नि़रे सानि़ ध़ नि़	सा ग – –
ऽ दृ ऽ रि	या ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ न भ	में ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
सा सा ग म	प प ध ध	नि नि नि सां	ध ध प प
उ म ड घु	म ड घ न	ग र ज त	ब र स त
३	×	२	०
गम प पमं, मंप	ध धप, पध नि	धनि रें निरें सांसां	धसां धप मग, ग
जिऽ ऽ याऽ मोऽ	ऽ राऽ डऽ र	पाऽ ऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ वेऽ, छा।
३	×	२	०

अन्तरा

म – प ध	सां सां सां –	ध सां रेंमं गंरें	नि सां ध –
दा ऽ मि नि	द म के ऽ	बि ज रीऽ ऽऽ	च म के ऽ
३	×	२	०
सां सां नि रें	सां सां धनि धप	ग म प ध	नि सां ध –
प व न ब	ह त वऽ हुऽ	जो ऽ र जो	ऽ र से ऽ
३	×	२	०
सां – सां –	सां सां सां सां	नि सां नि ध	नि सां ध –
कां ऽ पे ऽ	त न स ब	बि र ह ज	ल न से ऽ
३	×	२	०
गम प पमं, मंप	ध धप, पध नि	धनि रें निरें सांसां	धसां धप मग, ग
कैऽ ऽ सेऽ धीऽ	ऽ रऽ धऽ रूं	माऽ ऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ईऽ, छा
३	×	२	०

हंसध्वनी–त्रिताल (मध्यलय)

चंद्रमा भाल लोचन विशाल, गले व्याल माल
शंभु महाकाल ॥ ध्रु ० ॥ सुरसरी गंग सीस पर
राजे वंदन करे 'सुघर' दिक्–पाल ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थायी

ग (प)	– प निसां गं	रें – रें सां	नि प ग प	ग रे सा, सा
चं	ऽ द्र माऽ ऽ	भा ऽ ल लो	ऽ च न वि	शा ऽ ल, ग
	३	×	२	०
	प़ सा – सा	रे – सा, सां	नि प ग प	ग रे सा, ग (प)
	ले व्या ऽ ल	मः ऽ ल, शं	ऽ भु म हा	का ऽ ल, चं
	३	×	२	०

अन्तरा

प	ग प सां –	सां – सां, प	नि सां गं रें	सां नि प, ग
सु	र स री ऽ	गं ऽ ग, सी	ऽ स प र	रा ऽ जे, वं
	३	×	२	०
	प नि सां सां	गंरें – – सां	नि प ग प	ग रे सा, ग (प)
	ऽ दृ न क	रेंऽ ऽ ऽ सु	घ र द्वि क	पा ऽ ल, चं
	३	×	२	०

खमाज–त्रिताल (मध्यलय)

झनन झनन वाजे हे सखी घूँघरवा मोरे एरी
माई के हि बिध जाऊं सैंया पासे ॥ ध्रु० ॥
एक तो जाग रहे घरके लुगवा सब ही दूजे
'सुघर' पीतम राजे हे सखी ॥ १ ॥

स्थायी

सा नि़ सा म	ग म ध नि (सां)	ध – – –	पध निसां नि सां
झ न न झ	न न बा ऽ	जे ऽ ऽ ऽ	हेऽ ऽऽ स खी
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

—	नि॒	ध	म	प (ध)	ध	ग	म	ग	—	—	—	म	ग	सा	सा
ऽ	घूँ	घ	र	वा	ऽ	मो	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ए	री	मा	ई
०				३				×				२			
म	नि॒	ध	नि॒	प	ध	पध	निसां	—	नि॒	ध	म	पनि॒	धप	मग	रेग
के	हि	बि	ध	जा	ऽ	ऊंऽ	ऽऽ	ऽ	सैं	ऽ	या	पाऽ	ऽऽ	सेऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

	नि	नि (सां)	नि	सां	—	नि॒	ध	सां	—	—	—	नि	सां	ध	प
ऽ	ए	क	तो	जा	ऽ	ग	र	हें	ऽ	ऽ	ऽ	घ	र	के	ऽ
०				३				×				२			
ग	म	पध	(नि॒)	ध	प	ग	म	ग	—	—	—	म	ग	सा	—
लु	ग	वाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	ब	ही	ऽ	ऽ	ऽ	द्रू	ऽ	जे	ऽ
०				३				×				२			
सा	नि़	सा	म	ग	म	धनि॒	सांनि॒	ध	—	—	—	पध	निसां	नि	सां
सु	घ	र	पी	त	म	राऽ	ऽऽ	जे	ऽ	ऽ	ऽ	हेऽ	ऽऽ	स	खी
०				३				×				२			

खमाज—त्रिताल (मध्यलय)

मोहन जल भरन जाने दे, इतनी कर जोरूं तोरे
पैयाँ परत हूं, 'सुघर' अरज सुन ले रे ॥ ध्रु० ॥
ना, रोको मोहे बाट घाट में, मत भीजो मोरी
चुनरी रंग में, मानो नंद के ढीठ कन्हाई अब
न जाऊंगी तोरे गलियन ॥ १ ॥

स्थायी

पध	निसां	नि	सां	नि॒	धप	म	ग	सा	ग	—	म	प	—	—	—
मोऽ	ऽऽ	ह	न	ज	लऽ	भ	र	न	जा	ऽ	ने	दे	ऽ	ऽ	ऽ
२				०				३				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

म ग सा –	सा सा ग म	प – प ध	पध निसां नि सां
इ त नी ऽ	क र जो ऽ	रूं ऽ तो रे	पैऽ ऽऽ याँ प
२	०	३	×
नि॒ ध प –	नि नि नि नि	नि सां नि सां	ध नि॒ प ध
र त हूं ऽ	सु घ र अ	र ज सु न	ले ऽ रे ऽ
२	०	३	×

अन्तरा

प – प –	नि ध नि नि	सां – सां सां	– रें सां –
ना ऽ रो ऽ	को ऽ मो हे	बा ऽ ट घा	ऽ ट में ऽ
०	३	×	२
नि नि नि –	नि सां ध नि	सां रें नि सां	नि॒ध नि प –
म त भी ऽ	जो ऽ मो री	चु न री रं	ऽऽ ग में ऽ
०	३	×	२
ग म ग म	प – प ध	पध निसां नि सां	नि॒ ध प –
मा ऽ नो ऽ	नं ऽ द के	ढीऽ ऽऽ ठ क	न्हा ऽ ई ऽ
०	३	×	२
नि नि नि नि	नि सां नि सां	ध नि॒ प ध,	पध निसां नि सां
अ ब न आ	ऊं गी तो रे	ग लि य न,	मोऽ ऽऽ ह न
०	३	×	२

देस—त्रिताल (मध्यलय)

सावन घन गरजे गरजे गरजे बरसे नन्ही नन्ही
बूंदन परत परत चहुं ओर ओर देख देख जिया
मोरा लरजे ॥ धृ० ॥ चलत पवन सूं सननननननन
दादुर्वा बोलत अत शोर मचावत 'सुघर' प्यारे
बिन जियरा तरसे ॥ १ ॥

स्थायी

निसां रें नि॒ नि॒ध	पध म प नि॒	ध प – –	– ध म प
साऽ ऽ व नऽ	घऽ न ग र	जे ऽ ऽ ऽ	ऽ ग र जे
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म ग रे –	– – – –	– ग नि़ सा	रे ग रें सा
ग़ र जे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ब र से	न न्ही न न्ही
०	३	×	२
रे नि़ सा सा	(म)रे (म)रे म प	नि ध म प	निसां रेंगं रें नि
बूं ऽ द न	प र त प	र त च हूं	ओऽ ऽऽ र ओ
०	३	×	२
सां सां पनि सांरें	सांरेंसां नि ध प	(म)रे म प ध	म म म रे
ऽ र दे़ऽ ऽऽ	खऽऽ दें ऽ ख	जि या मो रा	ल़ र जे ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

म म प प	(सां)नि सां (मं)रें –	रें गं रें सां	रें नि सां सां
च ल त प	व न सूं ऽ	स न न न	न न न न
०	३	×	२
प नि सां रें	सां नि ध प	रेम पध प ध	म ग रे रे
दा दु वीं बो	ल़ त अ त	शोऽ ऽऽ र म	चा ऽ व त
०	३	×	२
रे ग नि़ सा	– रे म प	निसां निसां – पध	म मग रेग सारे
सु घ र प्या	ऽ रे बि न	जिऽ यऽ ऽ राऽ	त रऽ सेऽ ऽऽ
०	३	×	२

तिलककामोद–त्रिताल (मध्यलय)

मधुबन में होरी खेले, नंदके लाल बृज गोपाल एक
हूं नाही मानत सखियन की नीकी बात ॥ बृ० ॥
भर भर झोरी गुलाल अबीर दौर दौरत
रंग डारी 'सुघर' चुनर पचरंग की ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

स्थायी

सा रे म प	सां — — —	प पध निध धप	मग रेग सा —
म धु ब न	मे ऽ ऽ ऽ	ऽ होऽ ऽऽ रीऽ	खेऽ ऽऽ ले ऽ
३	×	२	०
— रे म ग	रे — रे ग	रे ग सा —	सा, नि़ सा रे
ऽ नं द के	ला ऽ ल बृ	ज गो पा ऽ	ल, ए क हूं
३	×	२	०
म प ध म	प नि सां रें	गं सां पध निध	धप मग रेग सा
न ही मा न	त स खी य	न की नीऽ ऽऽ	कीऽ वाऽ ऽऽ त
३	×	२	०

अन्तरा

म म प प	सां — सां सां	सांरें गं रें मं	गं रें सां सां
भ र भ र	झो ऽ री गु	लाऽ ऽ ल अ	बी ऽ ऽ र
३	×	२	०
— गं रें मं	गं — सां सां	प प ध म	ग — सा —
ऽ दौ ऽ र	दौ ऽ र त	ऽ रं ऽ ग	डा ऽ री ऽ
३	×	२	०
नि़ सा रे म	प ध म प	निसां रेंगं — सां	पध पम गरे सा
सु घ र चु	न र प च	रंऽ ऽऽ ऽ ग	कीऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
३	×	२	०

तिलंग—त्रिताल (मध्यलय)

रसिया कैसी बजाई मुरली, रसभरी मदभरी
बसकर गई ली ॥ धृ० ॥ उपवन जात रही फुल
बीनन, 'सुघर' मधुर सुर परत है कानन,
सुनत, ही हम सब तोरे बस गई लो ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थायी

म	ग	सा	–	ग	म	पनि	मप	मप	पसां	–	निप	ग	म	ग	–
र	सि	या	ऽ	कै	ऽ	सीऽ	ऽऽ	वऽ	जाऽ	ऽ	ईऽ	मु	र	ली	ऽ
×				२				०				३			
सा	सा	ग	म	प	नि	म	प	नि	सां	नि	प	मग	सा	गम	प
र	स	भ	री	म	द	भ	री	ब	स	क	र	गऽ	ई	लीऽ	ऽ
×				२				०				३			

अन्तरा

नि	प	म	ग	ग	म	प	नि	सां	–	सां	सां	प	नि	सां	सां
उ	प	व	न	जा	ऽ	त	र	ही	ऽ	फु	ल	बी	ऽ	न	न
×				२				०				३			
नि	नि	नि	नि	नि	सां	नि	सां	प	सां	नि	सां	नि	प	म	ग
सु	घ	र	म	धु	र	सु	र	प	र	त	है	का	ऽ	न	न
×				२				०				३			
सा	सा	ग	म	प	नि	म	प	नि	सां	नि	प	मग	सा	गम	प
सु	न	त	ही	हृ	म	स	ब	तो	रे	ब	स	गऽ	ई	लीऽ	ऽ
×				२				०				३			

जयजयवन्ती–त्रिताल (मध्यलय)

ए तुम मोरा रे पियरवा, कित को जा बसो कवने
नगरिया, जदुवा डार गयो ले जियरवा ॥ धृ० ॥
निंदिया हि रानी सपन भई, सुध बुध सारी खोय
गई, ना लागे मन मोरा मीत 'सुघरवा' ॥ १ ॥

स्थायी

रेग	मग	रे	सा	–	ध़	नि़	प़	रे	–	–	ग	म	प	म	ग
एऽ	ऽऽ	तु	म	ऽ	मो	ऽ	रा	रे	ऽ	ऽ	पि	य	र	वा	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रे म प सां	– नि ध प	ध प म ग	रे ग रे –
कि त को जा	ऽ ब सो ऽ	क व ने न	ग रि या ऽ
०	३	×	२
प़ प़ प़ रे	– ग म प	म ग म ग	रे ग रे सा
ज दु वा डा	ऽ र ग यो	ले ऽ ऽ जि	य र वा ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

म	प नि सां नि	सां – सां प	प रें – रें	नि ध प, म
निं	दि या ऽ हि	रा ऽ नी स	प न ऽ भ	ई ऽ ऽ, सु
	०	३	×	२
	प निसां रें रें	रें गं रें सां	रेंगं मंगं रें गं	रें सां – निसां
	ध बुऽ ऽ ध	सा ऽ री ऽ	खोऽ ऽऽ य ग	ई ऽ ऽ नाऽ
	०	३	×	२
	रें ध – नि	ध़ प म ग	रे ग म प	रे ग रे सा
	ऽ ला ऽ गे	म न मो रा	मी ऽ त सु	घ र वा ऽ
	०	३	×	२

रागेश्वरी (रागेश्री)–त्रिताल (मध्यलय)

बद्रवा देखे सावन के, चहुं ओर रिमझिम रिमझिम
बरसत, फुहार आज झुलसे जियरा ॥ धृ० ॥
पिहुं पीहूं बोले पपिहा, पिहु को पुकारे 'सुघर'
बन में, कूंकत है मन भावन के ॥ १ ॥

स्थायी

रे	नि़ सा ध़ नि़	सा – ग –	ग – ग म	रे सा –, सा
ब	द् र वा ऽ	दे ऽ खे ऽ	सा ऽ व न	के ऽ ऽ, च
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(सा) ध़ — नि़	सा म म ग	म ध ध म	म ध सां सां
हु ओ ऽ र	रि म झि म	रि म झि म	ब र स त
३	×	२	०
नि़ ध — म	ग सा, सां सां	ध म ग म	रें सा —, रे
फू हा ऽ र	आ ज, हु ल	से ऽ जि य	रा ऽ ऽ, ब
३	×	२	०

अन्तरा

ग	म ध — नि़	सां — सां —	नि़ ध सां रें	सां — —, सां
पि	हुं पी ऽ हूं	बो ऽ ले ऽ	ऽ ऽ प पि	हा ऽ ऽ, पि
	३	×	२	०
	गं गं — मं	रें — सां सां	म ध सां सां	नि़ ध —, म
	हुं को ऽ पु	का ऽ रे सु	घ र ब न	में ऽ ऽ, कूं
	३	×	२	०
	ध सां — सां	नि़ ध म म	ग — ग म	रें सा —, रे
	ऽ क ऽ त	है ऽ म न	भा ऽ व न	के ऽ ऽ, ब
	३	×	२	०

खंबावती—एकताल (मध्यलय)

निसदिन बिरहा जरावे, मोहे तुम बिन घरिपल
एक पल नाही सुहावे, नैनन नीर बहाये ॥ धृ० ॥
आस लगाये बैठी, अपनो मन मारे 'सुघर'
करूं तव सुमिरन, नैनन दीप जराये ॥ १ ॥

स्थायी

सां नि़	ध प	ध म	प ग	म ग	म सा
नि स	दि न	बि र	हा ज	रा ऽ	ऽ वे
×	०	२	०	३	४
सा —	ग —	प प	म म	प प	ग ग
मो ऽ	हे ऽ	तु म	बि न	घ रि	प ल
×	०	२	०	३	४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा	रे	म	प	ध	म	प	ध	सां	—	सां	—
ए	क	प	ल	ना	ऽ	हि	सु	हा	ऽ	वे	ऽ
×		०		२		०		३		४	
सांरेंगं	—	सां	सां	नि	ध	म	म	प	ग	म	सा
नैंऽऽ	ऽ	न	न	नी	ऽ	र	ब	हा	ऽ	ऽ	ये
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा

म	—	प	नि	—	नि	सां	—	नि	सां	—	सां
आ	ऽ	ऽ	स	ऽ	ल	गा	ऽ	ये	बै	ऽ	ठी
×		०		२		०		३		४	
सां	सां	रें	—	गं	गं	सां	नि	ध	नि	ध	प
अ	प	नो	ऽ	म	न	मा	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ध	म	प	ध	सां	नि	ध	प	ध	म	प	ग
सु	घ	र	क	रूं	ऽ	त	व	सु	मि	र	न
×		०		२		०		३		४	
सा	रे	म	प	ध	—	म	म	प	ग	म	सा
नै	ऽ	न	न	दी	ऽ	प	ज	रा	ऽ	ऽ	ये
×		०		२		०		३		४	

नारायणी—एकताल (मध्यलय)

सखियां मिल बिनन जात, फुलवन को
बगियां, गान करत मधुर मधुर, हांसत अत दे तारी ॥ धृ० ॥
इतने बिच आये कान्ह, हर लीन्हो बस को मान,
छीन लियो हरवा, पकर 'सुघर' बैयाँ ॥ १ ॥

स्थायी

म	प	ध	सां	नि	ध	म	प	नि	ध	—	प
स	खि	यां	ऽ	मि	ल	बि	न	न	जा	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मप	धप	म	म	रे	—	रे	म	रे	—	सा	—
फुऽ	लऽ	व	न	को	ऽ	ब	गि	यां	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ध़	सा	रे	म	रे	सा	रे	म	पध	नि॒	ध	प
गा	ऽ	न	क	र	त	म	धु	रऽ	म	धु	र
×		०		२		०		३		४	
धसां	रेंमं	रें	सां	नि॒	ध	मप	धसां	सांध	धप	मम	रेसा
हांऽ	ऽऽ	स	त	अ	त	देऽ	ताऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	रीऽ
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा

म	प	ध	सां	सां	सां	सां	—	रें	सां	—	सां
इ	त	ने	ऽ	बि	च	आ	ऽ	ये	का	ऽ	न्ह
×		०		२		०		३		४	
ध	सां	रें	मं	रें	सां	ध	सां	रेंसां	नि॒	ध	प
ह	र	ली	ऽ	न्हो	ऽ	स	ब	कोऽ	मा	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
रे	म	प	नि॒	ध	प	मप	धप	म	—	रे	—
छी	ऽ	न	लि	यो	ऽ	हऽ	रऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
रें	मं	रें	सां	नि॒	ध	म	पध	सांसां	धप	मम	रेसा
प	क	र	सु	घ	र	बै	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	यॉंऽ	ऽऽ
×		०		२		०		३		४	

राग—कलावती

यह एक नवनिर्मित राग है। यह समाज थाट से उत्पन्न हुआ है। वास्तव में यह एक दाक्षिणात्य राग 'वलजी' है। दोनों रागों के स्वर एक से ही हैं। हो सकता है कि किसी गुणि ने राग वलजी को हिंदुस्तानी नाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलावती दिया हो। कुछ भी हो यह एक औडव जाति का मधुर राग-रूप है और इसीलिये यत्र तत्र गाया जाता है। इस में ऋषभ और मध्यम वर्ज हैं। कोमल निषाद का प्रयोग आरोहावरोह में सीधा किया जा सकता है। इस का वादी स्वर पंचम और संवादी स्वर षड्ज माना गया है। यह रात्रि में कभी भी गाया जा सकता है। इस का मुख्य टुकडा गपधनि सां, ध, पग, धपगसा है। इसके अतिरिक्त निधसां, पधनिधसां, गपधनिधसां ये संगतियां भी प्रयुक्त होती हैं। साधारण चलन इस प्रकार होगा—

(१) सा, नि़ सा, ध़सा, गसानि़, ध़सा, ध़नि़ध़सा, प़ध़नि़ सा, ध़सा।

(२) नि़साग, गसा, नि़ध़साग, गसा, ध़नि़साग, गसा।

कलावती—एकताल (विलम्बित)

रे नभ चंदा दूज के ना छिप जावो अब ही ॥ धृ० ॥
आवन दे रे मोरे मन के चंदा ठाढ़ी मैं कवसों
मग जोहत अतही ॥ १ ॥

सागप—	ग,गपधप	ग	—	सा	—	(सा)	नि़				
रेऽऽऽ	ऽनऽभऽ	चं	ऽ	दा	ऽ	दू	ऽ				
४		×		०		२					
प़ ध़	प़	प़ ध़	सा नि़	नि़सा	—	सा	सा ग				
ऽ	ऽ	जं	ऽ	केऽ	ऽ	ना	ऽ				
०		३		४		×					
ग प	पप	गपधानिसां	नि	प ध	पग	ग धप	गसा				
ऽ	छिप	जाऽऽऽऽ	ऽ	ऽ	वोऽ	अब	हीऽ				
०		२		०		३					

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	धनि	सां	सां	धनि	सांसां	गं	सां
आ	वन	दे	रे	मोरे	मन	के	ऽ
४		×		०		२	
(सां)	नि	ध	प	गपध—	पधनि—	धनिसां—	सां
चं	ऽ	ऽ	दा	ठाऽऽऽ	ढीऽऽऽ	ऽऽऽऽ	मैं
०		३		४		×	
गंपं	गंसां	गं	सां	(सां) नि	धपग	पधपप	गसा
कव	सोंऽ	म	ग	जोऽ	हतऽ	अऽतऽ	हीऽ
०		२		०		३	

कलावती—त्रिताल (मध्यलय)

कहां से तुम आये मधराते, हमरो संग कर घाते ॥ ध्रु० ॥
नित नई रीत तुमरी 'सुघर' बिन जिय घबराते ॥ १ ॥

स्थायी

नि	ध ग प ध	प — — —	ग — ग प	ग — सा —
क	हां से तु म	आ ऽ ऽ ऽ	ये ऽ म ध	रा ऽ ते ऽ
	३	×	२	०
	सा सा ग —	प प ध प	गप धनि धप धप	गप गप गसा, नि
	ह म रो ऽ	सं ग क र	घाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ तेऽ, क
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ध	नि॒ प ध नि॒	सां – – –	नि॒ध प ध नि॒	सां – – गं
नि	त न ई ऽ	री ऽ ऽ ऽ	तऽ ऽ तु म	री ऽ ऽ सु
	३	×	२	०
	(गं सां) सां सां नि॒ नि॒	ध ध प प	गप धनि॒ धप धप	गप गप गसा, नि॒
	घ र बि न	जि य घ ब	राऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ तेऽ, क
	३	×	२	०

भैरव—त्रिताल (मध्यलय)

भोर भई दिनकर आये, प्रातसमय की
सृष्टि मनोहर अनुपम रूप दिखावे ॥ ध्रु० ॥
वन उपवन सब सुमन फूले, खगमृग अरू
पंछी सब डोले, गुंजन मधुप 'सुघर' सुहाये ॥ १ ॥

स्थायी

नि॒	सा ग – म	ध॒ – प –	म ग प म	रे॒ – सा –
भो	ऽ र ऽ भ	ई ऽ ऽ ऽ	दि न क र	आऽ ये ऽ
	३	×	२	०
	ध॒ ध॒ ध॒ ध॒	सा सा सा सा	ग – म (म)	रे॒ – सा सा
	प्रा ऽ त स	म य की ऽ	सृ ऽ ष्टि म	नो ऽ ह र
	३	×	२	०
	नि॒ सा ग म	प ध॒ नि सां	ध॒नि सांनि ध॒प मग	मप मग रे॒सा, नि॒
	अ नु प म	रू ऽ प दि	खाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	वेऽ ऽऽ ऽऽ, भो
	३	×	२	०

अन्तरा

प प प प	ध॒ ध॒ नि नि	सां सां सां सां	रें॒ – सां –
व न उ प	व न स ब	कु सु म न	फू ऽ ले ऽ
३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	रें	गं	मं	रें	सां	सां	—	नि	सां	रें	सां	ध	—	प	—
ख	ग	मृ	ग	अ	रू	पं	ऽ	छी	ऽ	स	ब	डो	ऽ	ले	ऽ
३				×				२				०			
सा	—	ग	म	ध	ध	प	म	रें	म	प	म	रें	—	सा,	नि
गुं	ऽ	ज	न	म	धु	प	सु	घ	र	ऽ	सु	हा	ऽ	ये,	मो
३				×				२				०			

विभास—एकताल (विलम्बित)

मो मन भाई मुरत सांवरी सलोनी बनवारी ॥ ध्रु० ॥
कटि पीतांबर मुरली सुहाये, सुधबुध हरलई
'सुघर' मुरारी ॥ १ ॥

स्थायी

पग	पध	सां	—	ध	प	पप	प—	ध	प	प	ग
मोऽ	मन	भा	ऽ	ई	ऽ	मुर	तऽ	ऽ	ऽ	सां	ऽ
४		×		०		२		०		३	
धपग—	रेंसा	सा	सारेग	रेगप	पग	पप	पध	(ध) सां—	धप	गपधप	गरेसा—
वरीऽऽ	ऽऽ	स	लोऽऽ	ऽऽऽ	नीऽ	बन	ऽऽ	वाऽ	ऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽरीऽ
४		×		०		२		०		३	

अन्तरा

पप	ध—	(ध) सां	सांसां	(सां) ध	(सां) ध	(ध) सां	—सां	रें	सां,	सां	रें
कटि	पीऽ	तां	बर	मु	र	ली	ऽसु	हा	ये,	सु	ध
४		×		०		२		०		३	
(रें) गं	रेंसां	सांरें	सांसां	सांसां	धध	प	(सां) धध	सां	धप	गपधप	गरेसा—
ऽ	बुध	हर	लई	सुघ	ऽऽ	र	ऽमु	रा	ऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽरीऽ
४		×		०		२		०		३	

३ सं. ल.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विभास—त्रिताल (मध्यलय)

मोरे अंगना आये री, रूनक झुनक पग
पायल बाजत, मुरली अधर धर सोहेरी ॥ धृ० ॥
श्यामल बरन बरनी न जाये, चंद लजाये
मदन लजाये 'सुघर' कमरीया सोहेरी ॥ १ ॥

स्थायी

गप	ध प ग रे	सा — — —	सारे ग रेग प	पध पग प, प
मोऽ	ऽ रे अं ग	ना ऽ ऽ ऽ	आऽ ऽ ऽऽ ऽ	येऽ ऽऽरी, रू
	३	×	२	०
	ध ध — सां	ध ध प प	प ध प प	ग रे सा सा
	न क ऽ झु	न क प ग	पा ऽ य ल	बा ऽ ज त
	३	×	२	०
	सा सा सा सा			
	ध़ ध़ ध़ ध़	सा सा रे सा	— पध सां सां	पध पग प, गप
	मु र ली अ	ध र ध र	ऽ सोऽ ऽ हे	रीऽ ऽऽ ऽ, मोऽ
	३	×	२	०

अन्तरा

	सां सां			सां
प	— ध — ध	सां सां सां सां	रें सां — सां	ध — प, सां
श्या	ऽ म ऽ ल	ब र न ब	र नी ऽ न	जा ऽ ये, चं
	३	×	२	०
		सां		
	रें सां — सां	ध — प ग	ध प ग प	ग रे सा —
	ऽ द ऽ ल	जा ऽ ये म	द न ऽ ल	जा ऽ ये ऽ
	३	×	२	०
	सा सा			
	ध़ ध़ सा सा	रे रे सा —	— पध सां सां	पध पग प, गप
	सु घ र क	म रि या ऽ	ऽ सोऽ ऽ हे	रीऽ ऽऽ ऽ, मोऽ
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भटियार–त्रिताल (मध्यलय)

अजहूं न आये कान्हर कारे, काहे फेर नैनन
आस लगाई, छोड अकेली कितको रमाये ॥ धृ० ॥
ऐसी रीत तोरी मन नही भाई लाज 'सुघर'
नही मन तोरे आई, सुमरन करूं नित जोग रमाये ॥ १ ॥

स्थायी

सा	ध ध – प	म – म –	पग – मं ध	सां – सां, नि
अ	ज हूं ऽ न	आ ऽ ये ऽ	काऽ ऽ न्ह र	का ऽ रे, का
	३	×	२	०
	रें नि – ध	प – म म	पध नि प प	मप – ग, सा
	हे फे ऽ र	नै ऽ न न	आऽ ऽ स ल	गाऽ ऽ ई, छो
	३	×	२	०
	प प ग प	ग रे सा –	मं ध मं ग	(रें)ग रे सा, सा
	ऽ ड ऽ अ	के ऽ ली ऽ	कि त को र	मा ऽ ये, अ
	३	×	२	०

अन्तरा

मं	ध सां – सां	सां – सां –	सां सां सां सां	रें सां सां सां
ऐ	सी री ऽ त	तो ऽ री ऽ	म न न ही	भा ऽ ई ला
	३	×	२	०
	ध नि प प	ध म प ग	मं ध मं ग	(रें)ग रे सा, म
	ऽ ज ऽ सु	घ र नहीं	म न तो रे	आ ऽ ई, सु
	३	×	२	०
	म पग मं ध	सां सां सां सां	म – म म	प ग रेसा, सा
	म रऽ ऽ न	क रूं नि त	जो ऽ ग र	मा ऽ येऽ, अ
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काफी—त्रिताल (मध्यलय)

डारी डारी डारी रंग पिचकारी, अबिर गुलाल
मलत मुख सखियन, काहूं को रंग में बोरी बोरी ॥ ध्रु० ॥
तननन बाजत मधुर सी बेनू, पग नूपुर बजे तिग् दा
तिग् दा थै, तिग् दा तिग् दा थै, तिग् दा तिग् दा थै,
घनश्याम 'सुघर' पिचकारी मारी ऐसो ॥ १ ॥

स्थायी

रे	म	नि	प	(ग)	^सा^रे	–	रे	ग	मप	धनि	ध	नि	–	प	–,
डा	री	डा	री	डा	री	ऽ	रं	ग	पीऽ	ऽऽ	च	का	ऽ	री	ऽ,
२				०				३				×			
ध	ध	ध	ध	धनि	सांनि	ध	प	पध	ध	म	म	रे	म	ध	प,
अ	बि	र	गु	लाऽ	ऽऽ	ल	म	लऽ	त	मु	ख	स	खी	य	न,
२				०				३				×			
सा	रे	^म^ग	म	प	ध	नि	सां	नि	ध	म	मप	(ध)	मप	रेग	सारे
का	ऽ	हूं	को	रं	ऽ	ग	में	बो	ऽ	रि	बोऽ	ऽ	रीऽ	ऐऽ	सोऽ
२				०				३				×			

अन्तरा

रे	ग	रे	सा	रे	नि	सा	सा	^म^रे	रे	म	प	धनि	सांनि	प	–,
त	न	न	न	बा	ऽ	ज	त	म	धु	र	सी	बेऽ	ऽऽ	नू	ऽ,
०				३				×				२			
प	ध	सां	रें	गं	रें	सां	सां	सांसां	रें	सांसां	नि	ध	प,	पप	नि
प	ग	नू	ऽ	पु	र	ब	जे	तिग्	दा	तिग्	दा	थै	ऽ,	तिग्	दा
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धध प म ग,	मम प मम ग	रे सा, रे नि	सा – रे ग
तिग् दा थै ऽ,	तिग् दा तिग् दा	थै ऽ, घ न	श्या ऽ म सु
०	३	×	२
म प ध सां	नि ध म मप	(ध) मप रेग सारे,	रे म नि प
घ र पि च	का ऽ रि माऽ	ऽ रीऽ ऐऽ सोऽ,	डा री डा री
०	३	×	२

काफी—त्रिताल (मध्यलय)

इतनी सुनो मोहे ना बिसारो प्रभुजी, शरण
गहे की लाज सम्हारो मोहे ना बिसारो ॥ ध्रु० ॥
दीनानाथ दया कर मोपे तन मन धन सब
वारुं तो पे, भव बंधन सब काट हमारो ॥ १ ॥

स्थायी

ग म नि प	ग रे – रे	ग म प म	प – प –
इ त नी सु	नो ऽ ऽ मो	हे ना ऽ बि	सा ऽ रो ऽ
२	०	३	×
– – ग म	ग रे –, म	ध ध – ध	धनि सांनि ध प
ऽ ऽ प्र भु	जी ऽ ऽ, श	र ण ऽ ग	हेऽ ऽऽ की ऽ
२	०	३	×
रे म ध प	ग रे – रे	ग म प म	प – प –
ला ऽ ज स	म्हा रो ऽ मो	हे ना ऽ बि	सा ऽ रो ऽ
२	०	३	×

अन्तरा

म – प ध	नि सां सां सां	निसां रेंगं रें सां	नि सांनि ध प
दी ऽ ना ऽ	ना ऽ थ द	याऽ ऽऽ क र	मो ऽऽ पे ऽ
२	०	३	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध	ध	ध	ध	ध	नि॒	ध	प	रे	म	नि॒	प	ग॒	—	रे	—,
त	न	म	न	ध	न	स	ब	बा	ऽ	रूं	ऽ	तो	ऽ	पे	ऽ,
२				०				३				×			
नि̣	सा	रे	ग	म	प	नि॒	धप	म	ग	म	प	मग	म	ग॒	रे
म	व	बं	ऽ	ध	न	स	बऽ	का	ऽ	ट	ह	माऽ	ऽ	शे	ऽ
२				०				३				×			

बिंद्रावनीसारंग-त्रिताल (मध्यलय)

बाजी रे मधुवन में मुरली की सुधुन परी

कानन में, तब बिसरी सुध सब सावन में ॥ धृ० ॥

मोर कोयलिया कूकत बन मे सुन सुन हूंक

उठत मोरे जिया में, मोद बढावत आनन में ॥ १ ॥

स्थायी

नि̣ सा

बा जि

म	प	नि॒	सां												
रे	म	प	नि॒	प	म	रे	सा	रे	रे	सा	—	—	—	सा	सा
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	धु	ब	न	में	ऽ	ऽ	ऽ	मु	र
०				३				×				२			
रेम	रेम	—	म	म	म	म	मरे	रेम	पम	रे	सा	सा	—,	सा	सा
लीऽ	कीऽ	ऽ	सु	धु	न	प	रीऽ	काऽ	ऽऽ	न	न	में	ऽ,	त	ब
०				३				×				२			
नि॒	नि॒	नि॒	—	नि॒	(नि॒)	प	प	मप	नि॒प	मरे	रेम	प	—म,	नि̣	सा
वि	स	री	ऽ	सु	ध	स	ब	साऽ	ऽऽ	वऽ	नऽ	में	ऽऽ,	बा	जिं
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

— म प प	नि नि सां —	— नि सां सांनि	सांरें सांनि प —,
ऽ मो र को	य लि या ऽ	ऽ कू क तऽ	वऽ नऽ में ऽ,
०	३	×	२
— निनि नि नि	पनि सांनि प पम	मप पम म रे	निसा सानि सारे —,
ऽ सुन सु न	हूंऽ ऽऽ क ऊऽ	ठऽ तऽ मो रे	जिऽ याऽ मेंऽ ऽ,
०	३	×	२
— सा नि नि	पनि सांनि प प	मप निप मरे रेम	मप —, नि सा
ऽ मो द ब	ढाऽ ऽऽ ब त	आऽ ऽऽ नऽ नऽ	मेंऽ ऽ, बा जि
०	३	×	२

विंद्रावनीसारंग—त्रिताल (मध्यलय)

सब सखियाँ आज आवो, 'सुघर' चरन
गुन गावो गावो ॥ ध्रु० ॥ नंद महर में जनम
लियो है, बृज लुगवन बड़ भाग पायो ॥ १ ॥

स्थायी

म प
स ब

नि नि प म	प रे — सा	रे — — —	सा — — —,
स खि याँ ऽ	ऽ आ ऽ ज	आ ऽ ऽ ऽ	वो ऽ ऽ ऽ,
०	३	×	२
म प नि प	सां सां नि प	मप नि पम रे	म रे, म प
सु घ र च	र न गु न	गाऽ ऽ वोऽ गा	ऽ वो, स ब
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म प निप नि	सां सां सां –	नि सां रें सां	नि सां नि प,
नं ऽ दऽ म	हु र में ऽ	ज न म लि	यो ऽ है ऽ,
	३	×	२
म प रें रें	सां सां नि प	मप नि पम रे	म रे, म प
बृ ज लु ग	व न ब ड़	भाऽ ऽ गऽ पा	ऽ यो, स ब
	३	×	२

मधमादसारंग—त्रिताल (मध्यलय)

मोहन मत वारा मोरा प्यारा, रंग रंगीला
बृज को उजियारा ॥ धृ० ॥ बंसी बजावत
सब को रिझावे, ग्वालन के घर गोरस पावे,
धन धन 'सुघर' नयन को तारा ॥ १ ॥

स्थायी

		म	सा	नि
रे	सानि सा रें प	रे – – –	नि – सा रे	नि सा –, सा
मो	हऽ न म त	वा ऽ ऽ ऽ	रा ऽ मो रा	प्या रा ऽ, रं
	३	×	२	०
	– निसा रे सा	नि – प सा	निसा रेम पनि पम	रे सा –, रे
	ऽ गऽ ऽ रं	गी ऽ ला बृ	जऽ कोऽ उऽ जिऽ	या रा ऽ, मो
	३	×	२	०

अन्तरा

	सां सां			सां
म	प नि – नि	सां – सां सां	नि नि सां सां	रें –सां, रें
बं	ऽ सी ऽ ब	जा ऽ व त	स ब को रि	झा ऽ वे, ग्वा
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अं रें – नि	सां – सां सां	सां नि – सां सां	नि प प, म
ऽ ल ऽ न	के ऽ घ र	गो ऽ र स	पा ऽ वे, ध
३	×	२	०
प म रे रे	सा सा नि नि सा सा	निसा रेम पनि पम	रे सा –, रे
न ध ऽ न	सु घ र न	यऽ नऽ कोऽ ऽऽ	ता रा ऽ, मो
३	×	२	०

भीमपलासी—त्रिताल (मध्यलय)

अँखियां मोरी बरसन लागी 'सुघर' कन्हाई
बिन दरस को तरसत हूं बिकल होत जात ॥ धृ० ॥
बिछुर गये तुम केहि कारन तें, बृज बनिता
अरु सब गोपिन तें, नंद के ललन हम दरस
को तरसत हूँ बिकल होत जात ॥ १ ॥

स्थायी

सा ग म प	ग मग रे सा	रे नि सा म	म – – –
अँ खि यां ऽ	मो ऽऽ री ऽ	ब र स न	ला ऽ ऽ ऽ
२	०	३	×
पम गम प –	प नि प नि	सां सां सां सां	सां गं रें सां
गीऽ ऽऽ ऽ ऽ	सु घ र क	न्हा ई बि न	द र स को
२	०	३	×
नि ध म प	सां (सां) – नि	ध प गं म	ग रे सा सा
त र स त	हूं ऽ ऽ बि	क ल हो ऽ	त जा ऽ त
२	०	३	×

अन्तरा

प म ग म	प – सां सां नि नि	सां सां सां –	नि सां सां –,
बि छु र ग	ये ऽ तु म	के हि का ऽ	र न तें ऽ,
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि नि सां गं	रें – सां सां	नि नि सां –	ध ध प –,
बृं ज ब नि	ता ऽ अ रु	स ब गो ऽ	पि न तें ऽ,
०	३	×	२
प नि प नि	सां सां सां सां	सां गं रें सां	नि ध म प
नं द के ल	ल न ह म	द र स को	त र स त
०	३	×	२
सां (सां) – नि	ध प ग म	ग रे सा सा,	सा ग म प
हूं ऽ ऽ बि	कु ल हो ऽ	त जा ऽ त,	अँ खि यां ऽ
०	३	×	२

हंसकिंकिणी–त्रिताल (मध्यलय)

झनन झनन पग नूपुर बाजे, गोरी राधिका
संग बिराजे ॥ धृ० ॥ वंसी अधरन मधुर
वजाई, ग्वाल बाल मन अति हुल साई,
कुंजन में दरसन को भाजे ॥ १ ॥

स्थायी

प नि ध प	म ग म प	(म) ग – रे सा	(सा) नि सा ग म,
झ न न झ	न न प ग	नू ऽ पु र	बा ऽ जे ऽ,
०	३	×	२
(सा) नि – सा ग	– प म –	प नि ध प	गप मग साग मप
गो ऽ री रा	ऽ धि का ऽ	सं ऽ ग बि	राऽ ऽऽ जेऽ ऽऽ
०	३	×	२

अन्तरा

म – प –	नि नि सां सां	नि सां गं रें	सां नि ध प,
बं ऽ सी ऽ	अ ध र न	म धु र ब	जा ऽ ई ऽ,
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मं	गं	रें	सां	नि	धप	म	ग	ग	प	म	ग	म	ग	रे	सा,
ग्वा	ऽ	ल	बा	ऽ ३	लऽ	म	न	अ ×	ति	हु	ल	सा २	ऽ	ई	ऽ,
सां नि	–	सा	सा	ग	–	म	म	प	नि	ध	प	धप	मग	साग	मप
कुं ०	ऽ	ज	न	में ३	ऽ	द	र	स ×	न	को	ऽ	भाऽ २	ऽऽ	जेऽ	ऽऽ

मेघमल्लार—एकताल (विलम्बित)

नींद नसानी कासे कहूं अपने जियकी बिथा
पावस की रित आई री ॥ धृ० ॥ ना आये मोरे
पियर, ना जाने कहां रमाये री ॥ १ ॥

स्थायी

निसोरसानि– –प	सा निसा	म रे	–	म रे	म रे	म रे	नि	रे	सा		
नींऽऽऽदऽऽऽ ४	ऽन	सा ×	ऽ	ऽ ०	ऽ	ऽ २	ऽ	ऽ ०	नी		
सा	–	म रे	म रे	मरे	प	–	नि	प	म	रे	सां सा
का ३	ऽ	सेऽ ४	ऽक	हूं ×	ऽ	अ ०	प	ने २	ऽ	जि ०	य
म	रे	सा नि	सा नि	सा	–	प नि	पप	प नि	पप	मरे	निसा
की ३	ऽ	बि ४	ऽ	था ×	ऽ	पा ०	वस	की २	रित	आऽ ०	ईऽ

निसारेमपनि – –	पमरेसानिसा – –
रींऽऽऽऽऽऽऽ ३	ऽऽऽऽऽऽऽऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

रें	—	सां	निसां	सां	सांसां	नि	पम	नि	प,	म	रे
ना	ऽ	आ	ऽऽ	ये	मोरे	पी	ऽऽ	य	र,	ना	ऽ
×		०		२		०		३		४	
प	—	म	रे	नि	सा,सा	निसारेसानिपरे—		———— सा ———			
जा	ऽ	ने	ऽ	क	हां,र	माऽऽऽऽऽऽऽ		ऽऽऽऽ ये ———			
×		०		२		०					

निसारेमपनि ——	पमरेसानिसा ——
रीऽऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽ
३	

चन्द्रकौंस—एकताल (विलम्बित)

पारन पायो तेरो परमातम, तूं ही जगत के रचन ॥ धृ० ॥
देवन देव महादेव 'सुघर' सुरमुनि सुमरन करे बचन ॥ १ ॥

स्थायी

गम	गसा	(सा)ध	निधनि	सा	—	ग	म	ध	धम	म	मम,
पाऽ	रन	पाऽ	योऽऽ	ते	ऽ	रो	ऽ	प	रऽ	मा	तम,
३		४		×		०		२		०	
म	मध	नि	ध	निसां	—	नि	सांनिधम	(म)	ग	गनि	सारे
तूं	ऽऽ	ऽ	ऽ	हीऽ	ऽ	ज	ऽगऽत	के	ऽ	रऽ	चऽ
३		४		×		०		२		०	
सा	सानिधनि	गमगसा	सा-धनि								
न	ऽऽऽऽ	पाऽरन	पाऽयोऽ								
३		४									

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म		नि						रें			
ग	म	ध	नि	सां	सां	निसां	निसां		रें	सां	धम
दे	S	व	न	दे	व	महा	SS	दे	SS	S	वS
३		४		×		०		२		०	
ग	नि							सा	म		
म	ध	नि	सां	गुंमं	गुंसां	निसां	नि-धम	म	ग	गनि	सारे
सु	ध	र	S	सुर	मुनि	सुम	रSSन	क	रें	बS	चS
३		४		×		०		२		०	
सा	सानिधनि	गमगसा	सा-धनि								
न	SSSS	पाSरन	पाSयोS								
३		४									

चन्द्रकौंस—त्रिताल (मध्यलय)

चांदनी आई, नील गगन सों, आलोकित करे
बनबन उपवन, नैनन अमित, अनंद भरे सुखसों ॥ ध्रु० ॥
कलियां खिली बेला चमेली, जूहि मोगरा 'सुघर' नवेली,
झुक झुक झूमत मंद पवनसों ॥ १ ॥

स्थायी

सां,	—	सांनि	धम	धनि	सां	—	—,	ध	—	म	—	म	गम	ग	सा	—,
चां	S	दS	नीS	SS	आ	S	ई,	नी	S	ल	S	ग	गS	न	सों	S,
	३				×				२				०			
	नि	—	सा	—	म	ग	सा	सा	ग	ग	म	म	नि	ध	म	म,
	आ	S	लो	S	कि	त	क	रे	ब	न	ब	न	उ	प	व	न,
	३				×				२				०			
	ग	म	ध	नि	सां	सां	सां,	सांनि	ध	नि	ध	म	ग	म	गसा,	सां
	नै	S	न	न	अ	मि	त,	अS	नं	द	भ	रे	सु	ख	सोंS,	चां
	३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म धुनि सां नि	सां — — —	नि — सां सांनि	सां गं सां —,
क	लि यांऽ ऽ खि	ली ऽ ऽ ऽ	बे ऽ ला चऽ	मे ऽ ली ऽ,
	३	×	२	०
	सां — सां ध	नि ध म —	ग सा ग, म	ग — सा, नि
	जू ऽ हि मो	ऽ ग रा ऽ	सु घ र, न	बे ऽ ली, झु
	३	×	२	०
	नि सा — सा	ग म ग सा	गम धुनि सां गुंरें	सांनि धुनि सां, सां
	क झू ऽ क	झू ऽ म त	मंऽ ऽऽ द पऽ	वऽ नऽ सों, सां
	३	×	२	०

सूहा—त्रिताल (मध्यलय)

कोऊ न जाने प्रीत की लगन, जाको लगी वही
तन जाने 'सुघर' रसिक पहिचाने ॥ धृ० ॥ पलहूं
दरस बिन दिन दिन बीतत, मानो कल्प समाने,
अंग अंग बिरहा सतावत तन सुध बुध बिसराने ॥ १॥

स्थायी

			सां	नि
नि	प नि म प	सां — — रें	सां रें नि सां	प नि प, नि
को	ऊ न जा ऽ	ने ऽ ऽ प्री	ऽ त की ऽ	ल ग न, जा
	३	×	२	०
	म		सा	
	प ग म रेसा	रे — सा —	नि सा म म	म — म, म
	ऽ को ऽ लऽ	गी ऽ ऽ ऽ	व ही त न	जा ऽ ने, सु
	३	×	२	०
	सां			
	प नि सां सां	रें रें सां सां	निनि पम पनि सांरें	सांनि पम गम, नि
	घ र ऽ र	सि क प हि	चाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	नेऽ ऽऽ ऽऽ, को
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	प नि प प	सां सां सां सां	नि सां रें सांरें	निसां प नि प,
प	लु हूं ऽ ढ़	र स बि न	दि न दि नऽ	बीऽ ऽ त त,
	३	×	२	०
	म – म –	म – प निप	ग ग ग म (म म म)	रें – सा – (सां)
	मा ऽ लो ऽ	क ऽ ल्प सऽ	मा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ने ऽ
	३	×	२	०
	नि सा सा ग (सा म)	– ग म म (म)	नि प सां सांरें	सां प नि प (नि)
	अं ऽ ग अं	ऽ ग बि र	हा ऽ ऽ सऽ	ता ऽ व त
	३	×	२	०
	म प नि सां (सां)	गं मं रें सां	निनि पम पनि सांरें	सांनि पम गम, नि
	त न सु ध	सु ध बि स	राऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	नेऽ ऽऽ ऽऽ, को
	३	×	२	०

मालगुंजी—त्रिताल (मध्यलय)

दरस वेग देऊ श्याम सुंदर मोरे, बिन दरसन पल पल
युग के सम, विकल होत अब प्राण हमारे ॥ धृ० ॥
कौन चूक मोसो भई देखी, पावस बिन दोऊ नैन
झरत हैं, 'सुघर' बिनत निठुराई न धारे ॥ १ ॥

स्थायी

म ग रे सा	– रेसा ध़ नि़	सा ग ग म	म म प म,
द र स बे	ऽ गऽ दे ऊ	श्या ऽ म सुं	द र मो रे,
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म	म	ध	ध	ध	नि	धप	म	ग	ग	म	म	प	ध	ग	म,
बि	न	दू	र	सु	न	पऽ	ल	प	ल	यु	ग	के	ऽ	स	म,
०				३				×				२			
ध़	नि़	सा	ग	म	म	ध	ध	नि	धप	ग	म	ग	रे	सारे	गम
बि	क	ल	हो	ऽ	त	अ	ब	प्रा	ऽऽ	ण	ह	मा	ऽ	रेऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

ग	म	ध	नि	सां	सां	ध	नि	सां	गं	गं	मं	गं	रें	सां	—
कौ	ऽ	न	चू	ऽ	क	मो	ऽ	सों	ऽ	भ	ई	दे	ऽ	खी	ऽ
०				३				×				२			
सां	—	नि	ध	प	म	ग	म	रे	ग	म	प	ग	प	म	म,
पा	ऽ	व	स	बि	न	दो	ऊ	नै	ऽ	न	झ	र	त	हैं	ऽ,
०				३				×				२			
ध	ध	प	ध	नि	धप	म	ग	रे	ग	म	प	ग	म	म	—
सु	घ	र	बि	न	तऽ	नि	ठु	रा	ऽ	ई	न	धा	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			

जोग—त्रिताल (मध्यलय)

पलखन नही निंदिया आज मोहे, सांवरे कन्हाई
तुमरी ओर लागे लागे आज रे मोरे चितवन ॥ धृ० ॥
'सुघर' रसिक तुम मोरे मन भाये, तुम बिन नही मोहे
काज सुहावे, हेर हेर बौरि भई दिन दिन रात रे, हे मधुवन ॥ १ ॥

स्थायी

				म	म							सा			
प	प	म	म	ग	ग	सा	ग	सा	—	—	—	नि़	सा	ग	म
प	ल	ख	न	न	ही	निं	दि	या	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ज	मो	हे
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प नि म प	ग प म म	सा ग — सा	नि सा ग म
सां व रे क	न्हा ई तु म	री ओ ऽ र	लां गे ला गे
०	३	×	२
— गम प ग	म — — —	गम पनि सांनि पम	गप मग ग सा
ऽ आऽ ऽ ज	रे ऽ ऽ ऽ	मोऽ ऽऽ रेऽ ऽऽ	चिऽ तऽ व न
०	३	×	२

अन्तरा

ग म प नि	सां नि प म	ग म प नि	सां — सां —
सु घ र र	सि क तु म	मो रे म न	भा ऽ ये ऽ
०	३	×	२
नि नि सां सां	गं गं मं मं	मं गं सां नि	सांगं मंगं सां —
तु म बि न	न ही मो हे	का ऽ ज सु	हाऽ ऽऽ वे ऽ
०	३	×	२
प नि प म	— म ग म	सा ग सा —	नि सा ग म
हे ऽ र हे	ऽ र बौ ऽ	री भ ई ऽ	दि न दि न
०	३	×	२
— गम प ग	म — — —,	गम पनि सांनि पम	गप मग ग सा
ऽ राऽ ऽ त	रे ऽ ऽ ऽ,	हेऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	मऽ धुऽ बऽ नऽ
०	३	×	२

आसावरी—झपताल (मध्यलय)

सुन सुन सखी मेरो, मत जा तूं जल भरन
गैलवा में आडो ठाढो, नंद दुलारो ॥ धृ० ॥
लाज 'सुघर' छांड, गालियन में सखि संग
झकझोर नित करत, कान्हर कारो ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थायी

ध	म	प	प	सां	नि	सां	ध	ध	प,
सु	न	सु	न	स	खी	ऽ	मे	ऽ	रो,
×		२			०		३		
ध	म	प	—	ध	ग	ग	रे	रे	सा
म	त	जा	ऽ	तूं	ज	ल	भ	र	न
×		२			०		३		
सा	रे	म	—	म	प	प	ध	ध	प,
गै	ल	वा	ऽ	मे	आ	डो	ठा	ऽ	ढो,
×		२			०		३		
प	गं	रें	सां	सां	निसां	गंरें	सांनि	धप	मप
नं	ऽ	द	ऽ	दु	लाऽ	ऽऽ	रोऽ	ऽऽ	ऽऽ
×		२			०		३		

अन्तरा

म	प	ध	—	ध	सां	सां	सां	—	सां,
ला	ऽ	ज	ऽ	सु	घ	र	छां	ऽ	ड,
×		२			०		३		
प	ध	सां	सां	गं	रें	सां	ध	—	प
ग	लि	य	न	में	स	खि	सं	ऽ	ग
×		२			०		३		
प	गं	रें	—	सां	नि	सां	रेंसां	ध	प,
झ	क	झो	ऽ	र	नि	त	कऽ	र	त,
×		२			०		३		
म	—	प	—	सां	निसां	गंरें	सांनि	धप	मप
का	ऽ	न्ह	ऽ	र	काऽ	ऽऽ	रोऽ	ऽऽ	ऽऽ
×		२			०		३		

कौंसीकानड़ा—त्रिताल (मध्यलय)

सावन आया मन भाया 'सुघर' जनके मन
आनंद छाया ॥ धृ० ॥ झर झर बरस रही बूंदरियां,
चमक चमक रही बीजरीयां, पापि पपिहा सबद सुनाया ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थायी

म ग	म त्रि ध नि ध	म — — —	पम गरे ग मग	सा रे सा — सा
सा	ऽ व ऽ न	आ ऽ ऽ ऽ	याऽ ऽऽ म नऽ	भा या ऽ सु
	३	×	२	०
	ध नि सा म	म — त्रि ध त्रि ध	सां — सां सांनि	धप मग रेसा —
	ध र ज न	के ऽ म न	आ ऽ नं दऽ	छाऽ ऽऽ याऽ ऽ
	३	×	२	०

अन्तरा

म ग म ग म म	त्रि ध त्रि ध सां नि सां नि	सां — सां —	सां नि सां सां —
झ र झ र	ब र स र	ही ऽ बूं ऽ	द रि यां ऽ
३	×	२	०
रें गं मंगं रें	सां सां ध सां नि	सां नि ध प	म ग रे सा
च म कऽ च	म क र ही	बी ऽ ज री	यां ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
— त्रि ध नि सा	म — (म) ग	म ध निसां सांनि	धप मग रेसा —
ऽ पा पि प	पी ऽ हा ऽ	स ब दऽ सुऽ	नाऽ ऽऽ याऽ ऽ
३	×	२	०

गोपीवसंत—त्रिताल (मध्यलय)

हो नंदलाल तुम प्रणत पाल, गो रखवारे प्रभु बृज रखवारे ॥ धृ० ॥ व्याकूल हूं मैं बावरी दरसन की प्यासी अब तो पधारो 'सुघर' गोपाल ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थायी

		नि	नि सां	
नि	सा गुम प म	प – प ध	ध नि सां सां	ध – प, सां
हो	ऽ नंऽ ऽ द	ला ऽ ल तु	म प्र ण त	पा ऽ ल, गो
	३	×	२	०
	नि			म
	– ध नि ध	म – – –	प – ग –	म म – ग
	ऽ र ऽ ख	वा ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	प्र भु ऽ बृ
	३	×	२	०
	म प ध नि	सां – – –	सांनि धप धनि धप	मप मग सा –
	ज र ऽ ख	वा ऽ ऽ ऽ	रेऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽ ऽ
	३	×	२	०

अन्तरा

म	नि सां		मं	
ग	म ध – नि	सां – सां –	– – गं मं	गं सां – गं
व्या	ऽ कू ऽ ल	हूँ ऽ मैं ऽ	ऽ ऽ बा ऽ	व री ऽ द
	३	×	२	०
	नि		सां	म
	सां ध नि ध	म – प –	ध – नि सां	ध प – ग
	र स ऽ न	की ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ प्या ऽ	सी ऽ ऽ अ
	३	×	२	०
	म धनि सां नि	सां – ध प	ध म प ग	म ग सा –
	ब तोऽ ऽ प	धा ऽ रो ऽ	सु घ र गो	पा ऽ ल ऽ
	३	×	२	०

मालकौंस—एकताल (मध्यलय)

ठुमक ठुमक लचकत चली नारी अलबेली, बृज
की संग सखियन सब करत बोली ठोली ॥ धृ० ॥
वाजे झननन पग पायल, लसत नासिक बेसर
सोहे दशन द्युति बरन बस करत चली ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थायी

							म	ध	नि		
सां	नि॒	ध॒	म	ग॒	सा	सा	ग॒	म	ध॒	नि॒सां	ध॒नि॒
ठु	म	क	ठु	म	क	ल	च	क	त	चऽ	लीऽ
×		०		२		०		३		४	
सां	—	—	नि॒	ध॒नि॒	सां	सांगं॒	सांनि॒	ध॒नि॒	ध॒म	ग॒	—,
ना	ऽ	ऽ	ऽ	रीऽ	ऽ	अऽ	लऽ	वेऽ	ऽऽ	ली	ऽ,
×		०		२		०		३		४	
						म	ध	नि	सां		
मध॒	मग॒	सा	—	नि॒	सा	ग॒	म	ध॒	नि॒	सां	सां
बृऽ	जऽ	की	ऽ	सं	ग	स	खि	य	न	स	ब
×		०		२		०		३		४	
ग॒ं	सां	—	सांनि॒	ध॒	म	ग॒	सा	ग॒म	ध॒नि॒	सां	ध॒नि॒
क	र	ऽ	तऽ	बो	ली	ठो	ली	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा

म		नि	सां								
ग॒	म	ध॒	नि॒	सां	सां	सां	सां	सांगं॒	मंगं॒	सां	सां,
बा	जे	झ	न	न	न	प	ग	पाऽ	ऽऽ	य	ल,
×		०		२		०		३		४	
सां	सां	सां	सां	—	सां	—	सां	ध॒नि॒	सांनि॒	ध॒	ध॒
ल	स	त	ना	ऽ	सी	ऽ	क	वेऽ	ऽऽ	स	र
×		०		२		०		३		४	
साग॒	मग॒	ग॒म	ध॒म	ग॒	म	ध॒	नि॒	सां	ध॒नि॒	सां	सां
सोऽ	ऽऽ	हेऽ	ऽऽ	द	श	न	द्यु	ति	वऽ	र	न
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गं सां	— सांनि	ध म	ग सा	गम धनि	सां धनि
ब स	ऽ कऽ	र त	च ली	ऽऽ ऽऽ	ऽ ऽऽ
×	०	२	०	३	४

मालकौंस—त्रिताल (मध्यलय)

क़दम की छैया आली देखो, गरे देत बैयाँ
रसिया बृज के बसैया ग्वार गुसैयां ॥ ध्रु० ॥
भूल परी देखत मोहनीया, बिसर गई सुध
'सुघर' गैयां, नंद कुंवर ये ढीठ कन्हैया ॥ १ ॥

स्थायी

सा	ग म ध नि	सां — ध —	म — म म	ग म ग, सा
क़	द म की ऽ	छै ऽ या ऽ	ऽ ऽ आ ली	दे ऽ खो, ग
	३	×	२	०
	सा ध — नि	सा म म —	— — म म	(म) ऽ ग नि
	रे दे ऽ त	बै ऽ याँ ऽ	ऽ ऽ र सि	या ऽ ऽ बृ
	३	×	२	०

त्रि

सा (ग) — म	ध — नि —	ध सां नि ध	म ग सा —
ज के ऽ ब	सै ऽ या ऽ	ऽ ग्वा र गु	सैं ऽ यां ऽ
३	×	२	०

अन्तरा

त्रि

ग — ग ग	म — ध —	सां सां सां —	सां सां सां —,
भू ऽ ल प	री ऽ दे ऽ	ख त मो ऽ	ह नी या ऽ,
३	×	२	०
ध नि सां मं	गं मं गं सां	— नि सां सां	ध नि ध म
वि स र ग	ई ऽ सु ध	ऽ सु घ र	गै ऽ यां ऽ
३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

—	धनि	सा	ग	म	म	ध	—	—	सां	नि	ध	म	ग	सा	—
ऽ	नंऽ	द	कुं	व	र	ये	ऽ	ऽ	ढी	ठ	क	न्है	ऽ	या	ऽ
३				×				२				०			

भैरवी—त्रिताल (मध्यलय)

रूनक झुनक पग पायलिया सुनत सखीया 'सुघर'
ग्वालनियां दौर दौर सब जात रही यां ॥ ध्रु० ॥
प्रेम मगन भई गांव लुगैयां तन मन धन सब
भूलत मातियां गावे श्रीकृष्ण कन्हैया ॥ १ ॥

स्थायी

सांगं	रेंसां	निरें	सांनि	धसां	निध	प	ध	सां	—	—	सांनि	प	ध	प	—
रुऽ	नऽ	कऽ	झुऽ	नऽ	कऽ	प	ग	पा	ऽ	ऽ	यऽ	ली	ऽ	या	ऽ
०				३				×				२			
ग	प	ध	नि	ध	पम	ग	—	म	प	ग	म	रे	रे	सा	—
सु	न	त	स	खी	ऽऽ	या	ऽ	सु	घ	र	ग्वा	ल	नि	यां	ऽ
०				३				×				२			
नि	—	सा	ग	—	म	ध	ध	ग	म	ध	नि	सांरें	सांनि	ध	नि
दौ	ऽ	र	दौ	ऽ	र	स	ब	जा	ऽ	त	र	हीऽ	ऽऽ	यां	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

ध	—	ध	ध	ग	म	ध	नि	सां	—	सां	सां	निसां	रें	सां	—
प्रे	ऽ	म	म	ग	न	भ	ई	गां	ऽ	व	लु	गैऽ	ऽ	यां	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां गं रें गं	सां रें नि नि	सांरें गंमं रें गं	सां रें सां –
त न म न	ध न स ब	भूऽ ऽऽ ल त	म ति यां ऽ
०	३	×	२
(गं) – – –	सांरें सांनि ध –	ग म ध(नि) नि	सांरें सांनि ध नि
गा ऽ ऽ ऽ	वेऽ ऽऽ श्री ऽ	कृ ऽ ष्ण क	न्हैऽ ऽऽ या ऽ
०	३	×	२

भैरवी—त्रिताल (मध्यलय)

लाल मोरी चूनरीया रंग दीनी, रंग बिरंगी
बरजोरी मोसे कीन्ही 'सुघर' कन्हाई मुख मारी
पिचकारी ॥ धृ० ॥ नंद गांव की भोरी ग्वालन
बेदरदी नित कौने कारन, मुख मीजत तुम
झक झोरी कीन्ही ॥ १ ॥

स्थायी

रे	नि सा ग म	प ध प म	ग – प म	रे सा –, रेरे
ला	ऽ ल मो री	चू ऽ न रि	या ऽ रं ग	दी नी ऽ, रंऽ
	३	×	२	०
	सानि सा – रेसा	ध – प –	प ग रे ग	नि रे ग प
	ऽऽ ग ऽ बिऽ	रं ऽ गी ऽ	ब र जो री	मो से की न्ही
	३	×	२	०
	ग प ध (नि)	ध प मं म	ग रे ग म	रे सा –, रे
	सु घ र क	न्हा ई मु ख	मा री पि च	का री ऽ, ला
	३	×	२	०

अन्तरा

ग – म ध	– ध नि ध	सां सां सां सां	नि रें सां सां
नं ऽ द गा	ऽ व की ऽ	भो ऽ री ऽ	ग्वा ऽ ल न
३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि — नि नि	सां — सां सां	— निसां रें सां	ध — प प,
बे ऽ द र	दी ऽ नि त	ऽ कौऽ ऽ ने	का ऽ र न,
३	×	२	०
सा प प —	ध पम ग ग	म मंम गरे ग	रें सा —, रे
मु ख भी ऽ	ज तऽ तु म	झ कऽ झोऽ री	की न्ही ऽ, ला
३	×	२	०

मधुवन्ती—त्रिताल (मध्यलय)

मंदलरा बाजिरे पायलिया मोरे पियरवा ॥ धृ० ॥
सुन धुन चौंक परी भवनन, बहुत दिनन पाछे आवन
कीन्हो 'सुघर' श्याम लखिकर दीन्हो गरवा ॥ १ ॥

स्थायी

मं ग रे सा	— (मं)ग — मं	प — — —	मंप धप मंग रेसा
मं द ल रा	ऽ बा ऽ जि	रे ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
०	३	×	२
(ग)मं — ग रे	सा — — —	नि सां गं रें	सां नि धप मंप
पा ऽ य लि	या ऽ ऽ ऽ	मो रे ऽ पि	य र वाऽ ऽऽ
०	३	×	२

अन्तरा

मंध पप ग मं	प नि नि नि	सां — — —	गं रें सां सां,
सुऽ नऽ धु न	चौं ऽ क प	री ऽ ऽ ऽ	भ व न न,
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां मं ग मं प	मं गं रें सां	निसां — नि ध प	मंप धप ग —
ब हु त दि	न न पा छे	आऽ ऽऽ व न	कीऽ ऽऽ न्हो ऽ
मं ग रे निसा	मंग पमं ध प	रें सां नि सां	ध प मं प
सु घ र श्या	ऽऽ मऽ ल खि	क र दी न्हो	ग र वा ऽ

राग विजयनागरी

यह कर्नाटकी पद्धति का राग है। हिन्दुस्तानी संगीत के 'मधुवन्ती' राग से यह बहुत कुछ मिलता जुलता है। मधुवन्ती राग में शुद्ध निषाद लगाया जाता है और राग विजयनागरी में निषाद बिलकुल वर्ज्य है। इसमें गंधार कोमल, मध्यम तीव्र और बाकी के स्वर शुद्ध हैं। निषाद वर्ज्य होने से इस की जाति षाडव-षाडव है। कर्नाटकी संगीत में राग-गायन के लिये समय का बंधन नही होता परंतु हिं. संगीत में यह राग दोपहर तथा रात्रि में गाया जाता है। इस राग में कभी-कभी मुलतानी, मधुवन्ती, शिवरंजनी आदि रागों का भास होता है। यह एक अति मधुर राग होकर स्वरविस्तार के हेतु इस में पर्यात्प स्थान है।

आरोहावरोहः— सा रे ग मं प ध सां। सां ध प मं ग रे सा।

साधारण स्वर विस्तार :—

सा सा

१ सा, ध़, प़, मं़प़, ध़ ध़, सा।

२ सा, रे, रेसाध़प़, मं़प़, सा।

३ सा, रे, ग रे, गरेसा, रेसाध़प़, प़ध़प़सा।

४ सारेगमं, मंप, धप, मंप, मंग, सागमंप, गमंग, रे, सा।

५ पधप, सां, सां, रेंसां, धसांरेंगं, रें, सां, सां, रेंसां धप, मंपधसांधप, मंपधमंग, सागमंप, गरेसा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विजयनागरी—त्रिताल (मध्यलय)

सखि आयेंगे मोरे साजना, सुन रहस रहस
मन नाचत दरस उनके सलोनी सुंदर मूरत ॥ ध्रु० ॥
नैनन की सेज बिछाऊं, पाव पखारूं, माथ लगाऊं,
झुलाऊं 'सुघर' झुलना ॥ १ ॥

स्थायी

मं ग
स खि

(प) मं ध प मं	ग रे – सा	रे – – –	सा –, सा सा
आ यें गे मो	रे सा ऽ ज	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ, सु न
०	३	×	२
(सां सा सा) ध़ ध़ ध़ सा	सासा रे सा	(ग्र) रे ग (मं) मं ग	मं ध प प
र ह स र	ह स म न	ना च त द	र स उ न
०	३	×	२
गमं पध मंप सां–	– प ध प	ध मं ग सा	रे सा, मं ग
केऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽ स लो नी	सुं द र मू	र त, स खि
०	३	×	२

अन्तरा

मं प (सां) ध प	सां – – –	ध सां रें गं	सां रें सां –,
नै ऽ न न	की ऽ ऽ ऽ	से ऽ ज बि	छा ऽ ऊं ऽ,
०	३	×	२
मं गं रें सां	रें – सां –,	ध सां रें सां	ध – प –,
पा ऽ व प	खा ऽ रूं ऽ,	मा ऽ थ ल	गा ऽ ऊं ऽ,
०	३	×	२
(सा) ध़ सा रे ग	मं ग मं ध	प – मंप धप	मंग मंग, मं ग
झु ला ऊं सु	घ र झु ल	ना ऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ, स खि
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्धसोहनी–त्रिताल (मध्यलय)

ए सखिरी बतियां सुन मो बिरहन के हियकी बिथा अगन जरावे जरावे ॥ धृ० ॥ ना संदेस ना पाति पठाइन 'सुधर' जाय परदेस बसे मोरा चैन हिरावे हिरावे ॥ १ ॥

स्थायी

नि॒रे॒ सानि॒ ध़ नि़	सा म — —	ग — म नि	ध — — —
एऽ ऽऽ स खि	री ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ब ति	यां ऽ ऽ ऽ
२	०	३	×
गम — म ग	म ध ध म	ध नि सां —	नि रें॒ सां नि
ऽऽ ऽ सु न	मो ऽ बि र	ह न के ऽ	हि य की बि
२	०	३	×
ध नि — ध	नि नि ध नि	ध — म (म)	ग रे॒ सा —
था ऽ ऽ ऽ	अ ग न ज	रा ऽ वे ज	रा ऽ वे ऽ
२	०	३	×

अन्तरा

म — नि ध	सां — सां सां	सां — सां सां	रें॒ सां सां सां
ना ऽ सं ऽ	दे ऽ स ना	पा ऽ ति प	ठा ऽ इ न
२	०	३	×
ध नि सां मं	गं रें॒ सां सां	सां नि ध म	नि — ध —
सु घ र जा	ऽ य प र	दे ऽ स ब	से ऽ ऽ ऽ
२	०	३	×
म — धनि सां	— सां सां सां	ध नि ध ग	म — म —
मो ऽ राऽ ऽ	ऽ चै न हि	रा ऽ वे हि	रा ऽ वे ऽ
२	०	३	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुघराई—त्रिताल (मध्यलय)

कारे बदरवा गरजे मैंको डरावे निंदीया न मोहे
आवे ॥ ध्रु० ॥ एक तो अंधेरी, दूजे बिरहा सतावे,
तीजे पपिहा पियु बोल 'सुघर' सुनावे ॥ १ ॥

स्थायी

सांनि सांरें गुरें सांनि	पानि सांनि पम गुरे	ग — म —	प निनि पम प
काऽ ऽऽ ऽऽ रेंऽ	बऽ ऽऽ दऽ रऽ	वा ऽ ऽ ऽ	ऽ गऽ रऽ जे
०	३	×	२
निनि पम पम रेसा	रें — सा —	सां रें सां रें	नि सां नि प
मैंऽ कोऽ ऽऽ डऽ	रा ऽ वे ऽ	निं दी या न	मो हे आ वे
०	३	×	२

अन्तरा

म	प नि प नि	सां — — —	सां — — —,	रें — सां नि
ए	क तो ऽ अं	धे ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ,	दू ऽ जे बि
	०	३	×	२
	सां रें — सांरें	सां — — —	प — नि —	प — —, नि
	र हा ऽ सऽ	ता ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	वे ऽ ऽ, ती
	०	३	×	२
	प ^मग — म	प — सां —	— — — —	नि प — ग
	जे प ऽ पि	हा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	पि यु ऽ बो
	०	३	×	२
	म रे — सा	रे — सा सा	निसा रेम पनि सांरें	सांनि पम गम रेसा
	ऽ ल ऽ सु	घ ऽ र सु	नाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ वेऽ ऽऽ
	०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सारंग–तीव्रा (मध्यलय)

बोल सरगम

प्रेम रस रसना पानन से मम पाप सारे मरे ॥ ध्रु० ॥
मोपे निस निस परम रस पीरन सों रसना
सुन सारे ॥ १ ॥

स्थायी

प	—	म	रे	सा	रे	सा	नि़	—	—	प़	—	नि़	नि़
प्रे	ऽ	म	र	स	र	स	ना	ऽ	ऽ	पा	ऽ	न	न
×			२		३		×			२		३	
सा	—	म	म	प	—	प	सां	—	रें	—	म	रे	—
से	ऽ	म	म	पा	ऽ	प	सा	ऽ	रे	ऽ	म	रे	ऽ
×			२		३		×			२		३	

अन्तरा

म	—	प	नि	सां	नि	सां	पं	रें	मं	रें	सां	प	—
मो	ऽ	पे	नि	स	नि	स	प	र	म	र	स	पी	ऽ
×			२		३		×			२		३	
रे	नि़	सा	रे	सा	नि़	—	—	सा	नि़	सा	—	रे	—
र	न	सों	र	स	ना	ऽ	ऽ	सु	न	सा	ऽ	रे	ऽ
×			२		३		×			२		३	

सूचना :—

१ इसमें जो गीत के अक्षर हैं वही ऊपर स्वर हैं।
जैसे :—गीत के अक्षर "प्रेम रस रसना" हैं।
उस के ऊपर गायन के स्वर प, म, रे, सा, रे, सा, नि़, इत्यादि।

२ "स" के पहाडे के जितने अक्षर होंगे उन सबों के ऊपर षड्ज स्वर समझना चाहिए। वैसे ही रे, म, प, नि इन अक्षरों को समझना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नीचे दिया हुआ गीत नंद, सुहाग, सोहनी, सारंग, ललित, तिलककामोद, शंकरा, सरस्वती, दुर्गा, जयजयवंती, आनंदी इन रागों के मुख्य स्वर समुदाय लेकर बनाया है। जिस राग का स्वर समुदाय है उसी राग का गीत में नाम है। जैसेः—ग, म, ध, प, रे, सा यह स्वर समुदाय "नंद" राग का है। अब इस के नीचे गीत के अक्षर "नंद के लाल" यह हैं। इत्यादि

राग-सागर—त्रिताल (मध्यलय)

नंद के लाल सुहाग गावो अत सोहनी मुख सारंग नैनन
ललित तिलक दिया ॥ ध्रु० ॥ शंकर भोला सरस्वती
माता दुरगा भवानी जै जै करत आनंद सों ॥ १ ॥

स्थायी

	म		सा ग	मं
ग	म ध — प	रे — सा सा	ग — मं —	ध — ध नि
नं	ऽ दृ ऽ के	लाऽ ल सु	हा ऽ ग ऽ	गाऽवोअ
	३	×	२	०
	ध नि			
	ध मं — ध	सां — रें सां	— नि प म	रे — रे म
	त सोऽ ह	नीऽ मु ख	ऽ सा ऽ ऽ	रंऽ ग नै
	३	×	२	०
	रे सा — सा	म मं म ग	सा रे म (गरे)	सांसा—, ग
	ऽ न ऽ न	ल लि त ऽ	ति ल क (ऽऽ)	दियोऽ, नं
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	प सां – सां	सां – सां मं	प नि̱ ध मं	प – – –
शं	ऽ क ऽ र	भो ऽ ला स	र स्व ऽ ति	माऽ ऽ ऽ
	३	×	२	०
	रे मं रेमं पमं	रे सा – सा	रे ध (सा) सा सा	म – म –
	ऽ ऽ ऽऽ ऽऽ	ता ऽ ऽ द्ध	र गा ऽ भ	वा ऽ नी ऽ
	३	×	२	०
	रेग मप मग रेग	रेसा निसा सा ग	म प ध नि	– प –, ग
	जैऽ ऽऽ जैऽ कऽ	रऽ तऽ आ नं	दू सों ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ, नं
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आ
भरत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi